हम लोग भी दक्खिन के जाने वाले मुसाफिर हैं, नागपुर से होते हुये जायंगे, रास्ते में एक दूसरे की हिफ़ाजत के लिये साथ होगये हैं और चूंकि हम लोगों का शुमार ज्यादा होने से किसी बात का खतरा नहीं है इसलिये हमेशा गांव के बाहर डेरा किया करते हैं।

मेरी इस सलाह से ऐसा असर उसके दिल पर हुआ कि उसने हम लोगों के साथ चलना मंजूर किया, मैंने देखा कि यह मौका चूकने का नहीं सो और भी ज्यादा इस बात पर ज़ोर दिया कि आप फौरन् शहर छोड़ कर हम लोगों में आ मिलें और मैं अपने इस कोशिश में कामयाब भी हुआ। मैं गोपाल को जो मेरे साथ गया था उसके पास छोड़ आया हूं कि उसे उस की चीज़ों के बांधने में मदद दे और अपने साथ रास्ता दिखलाता हुआ ले आवे सो इस में कुछ भी शक नहीं कि वे लोग सूरज डूबने के पेश्तर ही यहां पहुंच जायंगे"।

"बरकत अल्लाह की" मेरे वालिद ने कहा "बद्रीनाथ आज तो तुम्हारा चेहरा खूब रोशन है" फिर हमें सबों को तरफ़ देख कर जो बड़े ग़ौर से सुन रहे थे कहा "इसमें कुछ शक नहीं कि उस बुड्ढे कायथ के पास बेशुमार रुपया और जवाहिर होगा और उस की लूट से हम लोग नागपुर तक ब-आसानी तमाम पहुंच जायंगे; सो अगर आज वह अज़खुद आकर हम लोगों से न मिले तो दूसरी मंजिल में हम ही लोग उस से रास्ते में मिल जांय। थोड़ी ही देर में इसका फैसला हो जाता है, और अगर वह न आया तो लुघाइयों में से चंद लोग आगे बढ़ जावें और बिल यानी गाड़ने की जगह खोद कर तयार कर रक्खें।

पर यह सब तकलीफें हम लोगों को न उठानी पड़ीं, क्योंकि आफ़ताब ग़रूब होने के पेश्तर ही वह कायथ अपने इकरार पर आया और उस की मुलाकात मेरे वालिद और दो जमादारों से खेमे के हलके के दर्वाजे पर हुई। उसकी मुअज़िजाना शकल देख कर मुझ पर एक अजीब असर पैदा हुआ; वह निहायत खुश अखलाक और दरबारी शक्स जान पड़ता था। पहिले तो उसने अपने ज़नाने के हिफ़ाजत लिये एक छोटा सा खिमा खड़ा कर के चारों

तरफ़ से घेरा और बादज़ां अपने सोने का सामान उसी मुसाफ़िरी की गाड़ी में कर के अपने नौजवान खूबसूरत बेटे को साथ लिये हुआ उस मुकाम पर आया जहां मेरे वालिद और चंद दूसरे सरदार लोग शतरंजी बिछा कर बैठे थे, और काफ़िले के भी बहुतेरे लोग जमा थे सो इधर उधर की बात चीत होने लगी।

साहब, जो लोग उस बिचारे को घेर कर बैठे थे उन के दिल का हाल कौन कह सकता था? मुझे यह बात अजीब जान पड़ती थी। मैं जानता था कि उस की मौत उसी रात को होने वाली थी क्योंकि इस का फैसला उस के पहुंचते ही जिस वक़्त वह अपने सोने के लिये सामान कर रहा था हो गया था, मुझे यह भी मालूम था कि उस के क़ब्र के लिये जगह भी तज़वीज़ हो चुकी थी जिसमें वह और उसके सब साथी दफ़न किये जाने वाले थे; क्योंकि मैं अपने वालिद के साथ जा कर उसे खुदते देख आया था, पर ताहम मेरे वालिद, हुसैन और गाजसखां तीनों उस के पास बैठे बातें कर रहे थे। हुक्का चल रहा था और किस्से कहानियों का ज़िक्र हो रहा था और वह ज़ईफ़ अपने नये साथियों से मिलने के बाइस निहायत खुश था।

उस ने बद्रीनाथ से कहा कि "मैं आप का निहायत शुकरगुजार हूं कि आप मुझे उस मनहूस गांव से निकाल लाये, दरहकीकत यहां ऐसे जहांदीद: अशराफ़ों के सोहबत में हज़ उठता है। वहां तो मुझे रात भर लुटेरुओं का खौफ़ बना रहता और एक पल भी आंख न झपकती पर यहां मुझे ज़रा भी खबरदारी करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि खां साहब ने (मेरे वालिद को दिखला कर) मुझे तसकीन दी है कि यहां मेरी अच्छी तरह हिफ़ाज़त की जायगी"।

मेरे पीछे एक पुराना ठग बैठा था वह धीमी आवाज़ से दांत पीस कर मुझ से बोला—"हां ठीक है यहां इस की खूब हिफ़ाजत की जायगी, मैं ही खुद हिफ़ाजत करूंगा?"

मैंने पूछा "क्यों कर?"

उसने मुझे इशारा किया जिससे मैं समझ गया कि जो "भटोट" याने फांसी लगानेवाले चुने गये हैं उनमें से यह भी एक है।

उसने कहा कि "मुझे इस से बड़ी पुरानी खार है और अब मौका आ गया है कि मैं उसकी कसर निकाल लूं"।

इतना कहते ही उस के चेहरे पर गुस्सा आ गया। मैंने आहिस्ते से पूछा "कहिये तो क्या खार है?"

उसने कहा—"अभी नहीं, चुप रहो कल मजलिस में बैठ कर इस का तमाम हाल तुम्हें मुफस्सल सुनाऊंगा। इस का नाम हजलाल है; यह ऐसा पाजी है और इसने इतने जुल्म और खून किये हैं कि हम लोगों में सब से भारी ठग ने भी ऐसा जुल्म कभी न किया होगा। मगर इस का प्याला भर गया है और इस का दम इसके ओठों पर है बस एक ही झपेट मेरे हाथ का चाहिये कि फिर इस का दम लौट कर न आवेगा"।

मैंने कहा कि "यह लड़का—यह बिचारा खूबसूरत लड़का तो मैं जानता हूं कि जरूर छोड़ दिया जायगा"।

उस शख्स ने कहा "नहीं नहीं—क्या इसलिये उसे छोड़ दें कि पहिले ही मुकाम पर पहुंचते ही वह हमें गिरफ़ार करा दे। नहीं मियां, हम इसे आप से बेहतर समझते हैं और आप भी कुछ दिन में योंही समझेंगे"।

इतना कह कर वह उस शख्स के पीछे जाकर बैठ रहा मगर उसके बैठते ही उसने पीछे फिर के देखा गोया उसके आराम में खलल पड़ा हो।

मेरे वालिद ने कहा "आराम से बैठिये, आराम से बैठिये, यह भी हम लोगों का साथी ही है। ऐसे खुले मैदान में मजलिस के बातों का सुनना हर एक बशर का हक है और अकसर हम लोगों को ऐसे शख्स मिल जाया करते हैं किजो मजलिस को दिलचस्प किस्से कहानियों से गुलजार रखते हैं जब तक सोने का वक्त नहीं होता"।

सो वह पुराना ठग आराम से उस के पीछे चुपचाप बैठ गया। मैंने देखा कि वह उस मुहलिक हथियार यानी रुमाल को इस हाथ से उस हाथ में बार बार फेर रहा था—मैं बड़े जोश क्या, जो सच पूछिये तो दिली तकलीफ़ के साथ उन सबों को देख रहा था यहां तक कि मेरा सिर घूमने लगा। साम्हने तो वह मुअज़िज़ शख्स बैठा था, उसके बगल में उस का खूबसूरत नौजवान

लड़का और उनके पीछे उनके मारनेवाले बैठे हुये फकत हुकमी इशारे का आसरा देख रहे थे। वह विचारा अशराफ़ शख्स उस खतरे से इस कदर नावाकिफ था और मेरे वालिद के खुशअखलाकी और शीरीं जुबानी के बायस इस दिलो-जान से बातों मे लग रहा था कि उसे मुतलक भी खौफ का शुबहा न हुआ कि वह उनलोगों के हाथ मे पड़ा है जो उसे मौत के हाथ सुपुर्द करने वाले थे। आह! देखते देखते मेरी तबीयत इस कदर घबड़ाई कि मैं चिल्लाकर उसे भागने के लिये कहदूं, मगर मैं खूब जानता था कि ऐसा करने से फौरन् मेरी ही मौत होगी। पर मेरा चिल्लाना भी फ़जूल होता। मैंने अपनी आंखें उधर से फेर लीं पर वे फिर आप से आप उधरही जा लगीं। हर लहमे में उनकी मौत उनके सिर पर आकर गोया लौट जाती थी। आखिरकार मैं अपने दिलको ज्यादा न थाम सका और उठकर एक तरफ को चला था कि मेरे वालिद मेरे पीछे आ पहुंचे और बोले—

"कहां जाते हो? तुझे यहीं ठहरना होगा, यह शुरू मामला है इसे अच्छी तरह देखो और आखिर तक सब बातें ख्याल रक्खो तुझे भी ऐसाही करना होगा"।

मैंने कहा "जी मैं अभी आता हूं, फ़कत दो चार कदम आगे जाऊंगा, मेरी तबीयत दुरुस्त नहीं है।

उसने धीमी आवाज़ से कहा "कमहिम्मत कहींका—देखो देर मत लगाना यह मामला जल्द ते होने वाला है"।

दो एक मर्तबः इधर उधर टहलने से मेरी तबीयत दुरुस्त हो गई और मैं लौट कर फिर अपनी उसी जगह पर ठीक उस शख्स और उसके बेटे के साम्हने आकर बैठ गया। या अल्लाह! साहब, मैं अबतक देखता हूं कि वे दोनों बेटे और बाप गोया मेरे साम्हने वह बैठे हैं (इतना कहके अमीरअली ने अपनी अंगुली उस तरफ को दिखलाई) और मुझे मालूम पड़ता है कि गोया उसके बेटे की बड़ी २ आंखें मेरी तरफ देख रही हैं।

अमीरअली की शकल से जान पड़ता था कि गोया वह दरहकीकत उन्हें

देख रहा है, वह यकबयक चौंक उठा पर दो एक मर्तब: अपनी आखों पर हाथ फेरकर उसने फिर अपना बयान शुरु किया।

उसने कहा "तअज्जुब है साहब, मैं कसम खाकर कह सकता हूं कि वे दोनों मेरे साम्हने देख रहें हैं पर चूंकि मैं ज़ईफ हो गया हूं यह मेरी बेवकूफ़ी का बाइस है। खैर साहब, मैं कह चुका हूं कि मैं उन्हें बड़ी देर तक देखता रहा पर तौभी उन्हें कोई बात अजीब न मालूम पड़ती थी और न वे इस पर मुतलक ख्याल करते थे। वह ज़ईफ़ शख्स उस सुलहनामे का ज़िक्र जो राजा नागपुर और अङ्गरेजों के दर्मियान कायम होने वाला था बड़े जी जान से कर रहा था और कह रहा था कि राजा नागपुर ने यह काम अपने भाइयों के बरखिलाफ़ निहायत गैरमुनासिब किया कि इतने में मेरे वालिद ने आवाज़ दी कि "तमाखू लाओ"। बस यही इशारा था, ख्याल को भी इतनी ताकत नहीं कि उस तेज़ी को बयान कर सके कि जिस फ़ुर्ती से उस ठग ने उस शख्स के गले में रुमाल डाला और दूसरा उस की लड़की के गले में डाला गया और उसी दम वे दोनों मुंह के बल ज़मीन पर गिर के छटपटाने लगे। उन के मुंह से एक आवाज़ भी न निकली फ़कत गले में थोड़ी खर्खराहट सी हुई, कुछ देर के बाद "भटोटों" ने अपना रुमाल छोड़ दिया और दूसरे लोग जो पासरे में खड़े थे लाशों को उठा कर उस कब्र पर ले गये जो पेश्तर से तयार की गई थी।

मेरे वालिद ने आहिस्ते से कहा "तो अब बाकी लोगों का बन्दोबस्त करना चाहिये, तुम लोगों में से चंद लोग नौकरों पर जा टूटो, देखो किसी किस्म का शोरोगुल न हो, बैलवाले तो आसानी से मार लिये जांयगे"। सुनते ही चंद लोग तो उस मुकाम पर दौड़ पड़े जो उस कायथ ने अपने लिये पसन्द किया था और जातेही उन सब गाड़ीबान और नौकरों को जिन्हें मुतलक शक व शुबहा न था और जो आराम से एक दरख़ के तले बैठे खाना पका रहे थे घेर लिया। मैंने उन से हाथाबांही होते देखा मगर पेश्तर इस के कि वे कुछ चिल्ला सकें वे भी सब के सब मारे गये।

तब मेरे वालिद और हुसैन ने मेरा हाथ पकड़ और जल्दी से दौड़ा कर कहा "आओ और देखो कि क्यों कर ये सब दफ़न किये जाते हैं"।

मैं उन के साथ चला और वे मुझे खींचते हुये खेमे के एक तरफ़ ले गये वहां जाकर क्या देखता हूं एक गड्हे के सतह में एक क़ब्र खोदी है और आठ लाशें उस के बगल में पड़ी हैं। वह ज़ईफ़ शख़्स और उस का बेटा, उन की दोनों औरतें, एक बैलवाला, दो नौकर और एक बुढ़िया—एक मज़दूरनी और भी पड़ी थी जो औरतों के साथ खेमे के अंदर थी। ये सब लाशें अनक़रीब नंगी थीं और उन के देखने से निहायत खौफ़ जान पड़ता था क्योंकि वे एक दूसरे के ऊपर इधर उधर पड़े थे मगर उस गड्हे के ऊपर से साफ़ दिखलाई पड़ते थे।

वालिद ने पूछा—"सब आ गये"।

"जी खुदावन्द" लुवाइयों में से एक शख़्सने कहा जिसे मैं जानता था।

मेरे वालिद ने कहा "तो इन्हें फ़ौरन् दफ़न करो"।

बस इतना कहते ही वे सब झटपट उस क़ब्र में यों सुला दिये गये कि एक का सिर दूसरे के पैर पर था ताकि वे सब थोड़ी ही जगह में आजावें।

उस लूघे ने कहा—"तो इन सभों को खोल भी देना चाहिये क्योंकि ज़मीन पोली है और सब फूल उठेंगे"।

सो उन के पेट में बड़े २ सूराख कर दिये गये और मट्टी डाल दी गई ज़मीन पीट पाट कर बराबर कर दी और ऊपर से चिकना भी दी गई बस थोड़े ही देर के बाद ऐसी दुरुस्त बन गई कि कोई भी न जान सकता था कि इस के अंदर आठ नौ मुर्दे दफ़न किये हैं। हम लोग वहां से लौट आये और सब के सब आराम करने चले गये।

साहब, मैं क्यों कर आप से बयान करूं कि वह रात मैंने कैसे काटी! मैं लाखों तरकीब करता था मगर वह शख़्स और उसका बेटा दोनों मेरी निगाह के साम्हने दिखलाई पड़ते थे। उस ज़ईफ़ शख़्स की खर्खराहट अब तक मेरे कान में बजती थी और उसके बेटे की बड़ी २ आंखें मुझे दिखलाई पड़ती थीं। मुझे जान पड़ता था कि हज़ारों भूत गोया मेरे सीने पर बैठे हैं और नींद

तो मुझे मुतलक न आती थी। यह ऐसे संगदिली और सर्द-खूंरेज़ी का काम था कि मैं किसी तरह यह न समझ सकता था कि उस वक़्त मैं क्यों कर खामोश खड़ा देखता था। पर ताहम मेरे वालिद जिन्हें मैं बहुत ज्यादा प्यार करता था और हुसैन दोनों इस में शरीक थे। पर तौ भी मुझे किसी तरह तसल्ली न होती थी। मैं अपने उस छोटे खेमें के बाहर चुपके से निकल आया और हवा में बैठ गया। चांद खूब रौशन था और कभी २ बादलों के बीच से हो कर निकलता और फिर रौशन हो जाता, ठंढी ठंढी हवा बह रही थी जिस्से मेरे दिल को कुछ राहत मिलती थी। मैं चुपचाप बैठा हुआ उसे देखता था कि वह चलते २ बादलों में छिप जाता और फिर निकल आता था, कुछ देर के बाद थोड़ी २ बारिश होने लगी गोया माह हम लोगों के उस काम पर जिसका वह चश्मदीद गवाह था आंसू बहाता था सो मैं वहां से उठ कर फिर अपने खेमे में चला गया। मैं अपने वालिद के पास जो नींद में बेहोश थे जा लेटा और उन पर अपना हाथ रख आंखें बन्द कर सो रहा, आखिरकार मुझे नींद आगई और तब तक बेहोश पड़ा था कि जब सुबू को नमाज़ के वक़्त मेरे वालिद ने मुझे उज़ू के लिये ख़्वाब से बेदार किया।

दरी बिछाई गई और मैने अपने वालिद के साथ निमाज़ पढ़ा, मगर मेरा ख्याल उस ज़ईफ़ शख़्स और उस के बेटे की तरफ़ लगा था और बार २ मुझे रात की सब बातें याद आती थीं।

निमाज़ ख़तम होते ही घोड़ों पर ज़ीन कसी गई और हम लोग रवाना हुये, यह मंज़िल निहायत कड़ी थी क्योंकि यह भी बहुत ज़रूरी बात थी कि हम लोग गनेशपुर से जितना मुमकिन हो दूर निकल जावें ताकि किसी तरह का शकोशुबहा हमलोगों पर आयद न हो।

ठीक वक़्त पर हमलोग मंज़िल मकसूद को पहुंचे और एक आदमी बाज़ार में १।)का गुड़ खरीदने के लिये भेजागया; इस्से क्या मुराद थी मैं कुछ न समझता था मगर जब मैने अपने वालिद से पूछा तो इसका भेद मुझे समझाया गया।

मेरे पूछने पर वालिद ने जवाब दिया कि "यह तपौनी की कुरबानी कहलाती है जिस में हम सब लोग ऐसे माजरे के बाद जो तुमने कल रात

को देखा है शरीक होते हैं यह निहायत ज़रूरी मज़हबी दस्तूर है जिस में कभी ग़फ़लत न करना चाहिये।

वह शख्स गुड़ लेकर वापस आया और एक चुनिन्दे जगह पर बद्रीनाथ जो खुशी का झंडा लेकर चलता था एक कम्मल पर पच्छिम की तरफ़ मुंह करके बैठाया गया। उस के दोनो तरफ़ तमाम उमदे उमदे और मशहूर भटोट लोग उसी तरफ़ मुंह करके बैठे। तब मेरे वालिद ने कम्मल के पास ज़मीन में एक छोटा सा सूराख़ किया और उस के ऊपर वह कुल्हाड़ा, गुड़ का ढेर और एक रुपया "दच्छिणा" का रख दिया। थोड़ा सा गुड़ उस सूराख़ में मेरे वालिद ने डाल दिया और आस्मान की तरफ़ हाथ जोड़ कर ज़ोर से यों दुआ मांगी कि "हे प्रतापवती और बलवती देवी जो पुराने ज़माने से अपनी सहायता अपने भक्तों को देती आई है और जो ख़ास कर जूड़ा नायक और खड़िक बनवारी को ज़रूरत पड़ने पर एक लाख साठ हज़ार रुपया देती है हम लोग तेरी प्रार्थना करते हैं कि तू हमारी भी वैसीही सहायता कर और हमारी इच्छा को पूरी कर"।

इसी दुआ को सब लोगों ने जो वहां खड़े थे पढ़ा और मेरे वालिद ने हाथ में पानी लेकर उस कुल्हाड़े और सुराख पर छिड़का तब उस ने गुड़ को उठाया और एक एक टुकड़ा हर एक ठग को सिल सिले से दिया जो उसे चुप चाप खाते चले गये; तब उन सभों ने थोड़ा थोड़ा पानी पीया और गुड़ का ढेर उठा कर बाकी के गरोह में बांट दिया गया जिन्हों ने उसी तरह खामोशी से खा कर पानी पीया। मेरे सिवाय हर एक को गुड़ दिया गया, चूंकि मैंने अभी तक किसी आदमी को न मारा था इसलिये मैं गुड़ खाने में उन के साथ शरीक होने के काबिल-पसन्द न समझा गया। पर तौ भी मेरे वालिद ने अपने हिस्से में से कुछ मेरे लिये बचा लिया और मुझे खाने के लिये दिया। जब मैं गुड़ खा चुका तो उनने मुझ से कहा कि—

"तुमने गुड़ खाया और अब दिल से ठग हो चुके। इस मुकद्दस गुड़ की यह तासीर है कि जैसा तुम देख चुके हो कि अगर तुम हम लोगों को छोड़ने की भी खाहिश करो तो हरगिज़ नहीं छोड़ सकते। कोई भी चाहे कैसे ही

दर्जे का शख्स क्यों न हो एक टुकड़ा गुड़ खाने से ही वह बिलाशक ठग हो जायगा। इस का ऐसा कामिल असर उस पर होता है कि वह हरगिज़ इसे नहीं छोड़ सकता"।

मैंने कहा "यह बड़े ताज्जुब की बात है क्या ऐसी बातें दरहक़ीक़त देखने में आई हैं"?!

उन ने कहा मैं सैकड़ों ऐसी तफ़सीलें बयान कर सकता हूं मगर इतना वक़्त नहीं है पर तुम हुसैन से या और चाहे जिस से पूछ लो वे भी यही बयान करेंगे"।

शाम के वक़्त जब हम सब लोग साबिक़ दस्तूर जमा हुए मेरे वालिद ने मेरे कच्चे दिल के लिये सख़्त शिकायत की।

उनने कहा "मेरे फ़र्ज़न्द! यह कैसी बात है कि तुम जो इस बहादुरी से उस शेर पर टूटे थे इस तौर लड़कों के खेल से पीछे हटो। तुम्हे मर्द होना और इससे बेहतर बर्ताव करना चाहिये और यह याद रक्खो कि तुम गुड़ खा चुके हो"।

हुसैन ने कहा "भई बड़े शर्म की बात है—साहबज़ादे से ऐसी बातें न कहिए याद रखिये कि शुरू में आप भी कुछ इससे बेहतर न थे। क्या आपको वह मुकाम याद नहीं है कि किस मुश्किल से मैंने गनेशा को एतकाद दिलाया कि आप ने दरहक़ीक़त उमदी चीज़ पाई है? साहबज़ादे को ऐसे ही दो चार मामले और देखने दीजिये फिर तो यह बिलकुलही तबदील हो जायगा और अपने काम पर पूरा शेर निकलेगा। फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह हो और मेरी पीठ ठोंक कर बोला "बेटा, कुछ परवाह नहीं! तुम से भी बहादुर लोगों ने यह काम पहिले पहिल निहायत खराब तौर से शुरू किया है और आखिर उम्र भर कब्रही खोदते रहे मगर इनशाअल्ला तुम अपने वालिद से भी सबक़त ले जाओगे, इतनी बात इस बुढे हुसैन की भी याद रखना। फिर मेरे वालिद से कहा कि "इसे फ़क़त दो चार मामले और देख लेने दीजिये फिर चाहे आप खुद इसे आज़मा कर देख लीजियेगा कि मेरा अर्ज़ करना सही है या ग़लत"।

"बेहतरहै" मेरे वालिद ने कहा "मेरे फर्जन्द! मेरा मकसद तुम्हारी मलामत करने का न था मुझे इस बात का खौफ था कि तुम्हारे दिल की कमजोरी कहीं ज्यादातर मज़बूत नही जावे। अपने पड़ोसियों पर जैसा चाहिये मेहरबान हो, फ़िर्केवालों से मोहब्बत रक्खो, गरीबों पर रहम करो और मोहताजों को खैरात दो; मगर याद रक्खो कि तुम ठग हो और उन लोगों की बरबादी बेरहमी के साथ करने के लिये कसम खा चुके हो जिन्हे अल्ला ताला तुम्हारे राह में भेज दे।

मैंने कहा आपकी नसीहत मेरे दिलमें नक्श गई है अब आपको हरगिज़ यह न कहना पड़ेगा कि मैंने अपने काम मे गफ़लत की है, आप जिस वक्त मुनासिब समझें मैं रुमाल लेने को तयार हूं" फिर बात टालने के लिये मैंने कहा कि महम्मद भटोट ने मुझ से यह इकरार किया था कि मै तुम्हे उस शख़्सका अहवाल सुनाऊंगा जो कल रात को मारा गया है सो मैं चाहता हूं कि वह अपना इकरार पूरा करे।

चंद लोगों ने कहा "हां हां महम्मद को अहवाल बयान करने खूब आता है हम सब भी यह माज़रा सुना चाहते हैं"

महम्मद ने थोड़ा पान और सुरती खाया और दो चार मर्तबः उन्हे दातों में दबाकर, पीक थूक, दो ज़ानू हो बैठा और मेरे वालिद से अपना और हजलाल का अहवाल यों बयान करने लगा कि—

नागपूर के ज़िले से बोरी नामक एक छोटे से गांव में मेरी पैदाइश हुई थी; आपलोग जानतेहो हैं कि मेरे वालिद ठग थे और मैं पुश्तैनी ठग हूं। उन लोगों के अहवाल हमारे खानदान में ज़बानी एक दूसरे से सुनते आये हैं जो काबिल बयान है पर चूंकि उस्से और हमारे इस माजरे से कोई सरोकार नही है इसलिये मैं उसका बयान करना लाहासिल समझता हूं। उनका ज़माना हमेशा सरसब्ज़ था उन्होने बेतहाशा रुपया नागपुर के दरबार को अपने गांव की पटेली और काम के लिये दियाथा, पर तौभी वे अपना ठगी का कार बराबर करते थे। आप लोग जानते ही हैं कि मेरे दादा क़ासिम अली ठगो में सब से मशहूर सरदार हुये कि उनके इन्तकाल के बाद आज तक वैसा

अफ़सर न हुआ और मेरे वालिद जी उस वक्त छोटे थे उनकी हशमत और दर्जेपर जानशीन हुये। अरसे तक वे अपनी जगह पर कायम रहे और कोई भी उनके हक़ पर दाविदार न खड़ा हुआ।"

मगर उनकी किस्मत में यह इकबाल चंद्रोज़ः था। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है कि जब चंद सिपाही कचहरी के पेशकार से भेजे हुये यह हुक्म लेकर पहुंचे कि उन्हें हुजूर में हाज़िर करो। मेरे वालिद ने इस बात के दर्याफ़ करने की कोशिश की कि मुझे बुलाने का क्या सबब है मैं तो सरकारी देन बराबर वक्त पर देता आया हूं मगर यह सब बे फायदा हुआ; और जब उन्हों ने देखा कि उन लोगों से ज्यादा बहस करना बे फायदा है तो उन्हों ने यह कोशिश करना चाहा कि सरदार को कुछ घूस देकर यह कहलवा दे कि उन से मुलाकात न हुई। मगर वह किसी तरह राज़ी न होता था आखिर उन्हें लाचार हो कर उन सिपाहियों के साथ जाना पड़ा और मेरी सख्त आर्ज़ू पर वे मुझे भी अपने साथ ले गये। मैं उस वक्त नौजवान अनकरीब आप के साहबज़ादे के उम्र का था। कई मंज़िले दूर दराज़ की ते करते हुये हम लोग नागपुर पहुंचे और पहुंचते ही हाथ पैर में हथकड़ी और बेड़ी पड़ गई और हम लोग एक निहायत गंदे और मैले कैदखाने में डाल दिये गये यहां तक कि ज़िन्दगी के आम आराम भी हम लोगों को मुहैया न होते थे। न पान न तमाखू और न साफ कपड़ा हमें मिलता, और न हम किसी को देखने पाते और निहायत मोटा और नाकारा खाना हम लोगों को दिया जाता था। इस तरह तीन महीने निहायत तकलीफ से कटे। मेरे वालिद ने बहुत कोशिश और आर्ज़ू इस बात की की कि भाई मेरा क्या कसूर है या मुझ पर किसने इलजाम लगाया है मगर किसी ने भी कुछ जवाब न दिया हम लोगों ने हज़ारों कोशिश की कि किसी तरह हम लोगों के हालत की खबर हमारे दोस्तों और घर को पहुंचे मगर कोई भी हमारी बातों पर कान न देता। उसी कैदखाने में अकेले पड़े २ हज़ारों तरह के ख्याल किया करते कि हमारी इस तकलीफ का क्या बाइस है मगर कोई बात दिल में न जमती थी। आखिरकार एक दिन यही कमबख्त हजलाल जो कल मेरे हाथों से मारा गया चंद

सिपाहियों को लिये हुआ हमारे कैदखाने के पास आया। उसे देखते ही मेरे वालिद ने ख्याल किया कि अब जान से हाथ धोना चाहिये और समझ लिया कि मौत की घड़ी आ गई; मगर होश सम्हाल कर ब्रजलाल को पहिचाना और फौरन् उसे हज़ारों गालियां और लानत देना शुरू किया।

जब वे चुप हुये, ब्रजलाल ने हैबतनाक नज़र से देखा और कहा "पटेल जी! शायद अब आप बराह मिहरबानगी सरकार को इस बात से आगाह करेंगे कि कुल माल व असबाब जैसुखदास महाजन का जो आप के गांव में रहता था और जिसके हालात जानने के लिये, आप खूब जानते हैं, कि मैं चन्द बरस पेश्तर भेजा गया था क्या हुआ? आप को शायद वह भी याद होगा कि आप ने मेरी किस कदर मेहमानदारी और खातिरी की थी सो भगवान चाहेगा तो मैं देखूंगा कि मैं उसका बदला आप को दे सकता हूं या नहीं"।

मेरे वालिद ने जवाब दिया कि "तू झूठा है और कमीनेपाजी मुतसद्दी का बेटा है, तू एक लफ्ज़ भी मेरे जबान से न पावेगा। जा किसी दूसरे शख्स को जो कासिम पटेल से गुफ़्गू करने के लायक हो भेज, तो जो कुछ मैं जानता हूं कह दूंगा मगर तुझ कुत्ते के बच्चे से मैं एक लफ्ज़ भी न कहूंगा"।

उस कमबख़्त ने कहा "बहुत अच्छा"—इतना कह के अपने सिपाहियों को उस ने इशारा किया और उन्हों ने मेरे वालिद बिचारे को गिरफ़ार कर एक तोबड़े में गर्म राख भर के उन के मुंह पर चढ़ा दिया और पीठ पर इस कदर ज़ोर से मूके मारने लगे कि सांस फूलने लगा और राख नाक में इतनी चढ़ गई कि वे अनकरीब पशमुर्दा हो गये। बार २ मेरे वालिद ब्रजलाल को बताने से इन्कार करते थे और बार बार यह कारखाई होती थी। आखिर इन्सान कहां तक बरदास्त कर सकता है, बेहोश हो कर गिर पड़े। तब वह कमबख़्त कैदखाने से चला गया मगर सख्त हुक्म दे गया कि कोई पानी न देवे। मगर उस का बद इरादा पूरा न हुआ क्योंकि किस्मतों से कुछ पानी सुबह के वज़ू का बचा हुआ था सो थोड़ा तो मैंने उनके मुंह पर छिड़का और दो एक घूंट पिला भी दिया जिस से उन्हें कुछ होश आई और वे उठ बैठे और थोड़ा और पानी पी कर ताजे हुये।

पांचवां अध्याय ।

आखिर मेरे वालिद ने कहा "मेरे फर्जन्द ! मैं चाहता हूं कि मैं मर गया होता ! देखो उस कमबख़ बदमाश का कैसा काला दिल होगा कि जिस ने इस तौर का बदसलूक इस ज़ईफ शख्स से किया है । खुदा मेरी बद-दुआ उस पर और उसके खानदान पर डाले; कुछ दिनों तक तो बेशक उसका दौरदौरा रहेगा पर आखिरकार इन्साफ उस से इसका और तमाम जुल्मों का बदला लेगा" ।

मैंने पूछा "यह तो कहिये कि आप से और इस से किस बात का झगड़ा है और क्यों यह इस तौर आप को तकलीफ़ देता है" ? ।

उन ने कहा "अच्छा सुनो मैं तुम्हें बतलाता हूं । चंद बरस गुज़रे जब कि तुम अभी छोटे लड़के थे, कि जैसुखदास नामी उस गांव के मशहूर साहूकार का इन्तकाल हुआ । मरने के वक़्त उस ने मुझे अपने पास बुलाया और अपने बाल बच्चों को मेरे सुपुर्द कर के कहा कि भाई मैं आप को सच्चा और ईमानदार मुसलमान समझकर दस्तबस्तः कुनबे अर्ज करता हूं कि आप मेरे इन बालबच्चों की हिफाज़त इस ब्रजलाल के ज़ुल्म से कीजियेगा—यह ब्रजलाल वह शख्स है जो मेरी बरबादी की नीयत से मुझे बेइज्ज़त किया चाहता था और मैंने इसे उस बदमाशी के लिये नागपुर के भरे दरबार में जूतों से पीटा है । दरहकीकत ब्रजलाल ने उस पर मालगुजारी की आमदनी खा जाने का इलज़ाम लगाया था—क्योंकि जयसुख ही के मारफ़त, तमाम मालगुज़ारी न कि फकत हमारे ही गांव की मगर आस पास के इलाकों की भी, जो अंदाज़न एक लाख रुपयों के होगी, जमा होती थी । उस की किस्मत ज़बर्दस्त थी, जयसुख की नेकनामी पर इस रज़ील के कोशिश से कोई भी नुकसान न पहुंचा और ब्रजलाल के कहने पर किसी ने भी कुछ ख्याल न किया । मगर ब्रजलाल की जो मलामत हुई उस की शर्मिन्दगी उसके दिल से हरगिज़ न हटी । वह अन्दरही अन्दर जलता था और मेरे उस दोस्त को बरबाद करने की कोशिश में बराबर

लगाही रहता था। चूंकि उसके कई एक ज़बर्दस्त दुश्मन दरबार में थे इसलिये उसे हमेशा इस बात का खौफ़ बना रहता था कि किसी न किसी दिन मैं झूठी तोहमत में लूटा जाकर कैद किया जाऊंगा। आखिरकार उसका इन्तकाल हो गया और मरती वक़्त उस ने मुझ से यह इलतिजा की कि मेरे बाद जितना जल्द हो सके मेरी बीबी और लड़कों को उन के जेवर और थोड़ा बहुत नक़द सहित उन की मुल्क मारवाड़ को पहुंचा देना। मुझ से जितना जल्द हो सका मैंने उन्हें सही सलामत मारवाड़ को रवाना किया और चंद लोग जो खास अपने थे हिफ़ाज़त के लिये साथ कर दिये ताकि रास्ते में ठगों से उन्हें कोई नुकसान न पहुंचे।

"उन्हें गये अभी एक हफ़्ता भी न हुआ था कि यही ब्रजलाल एक दूसरे मुतसद्दी के साथ अपने मालिक नारायन पंडित पेशकार का यह हुक्म लिये हुआ आया कि जयसुख का कुल माल वो असबाब और उस के खानदान के लोग गिरफ़ार कर लिये जावें। चूंकि यह हुक्म ज़बानी था, और ऐसा रिवाज न था, मैंने उस मरहूम शख्स के माल वो असबाब और खानदान के लोगों का पता बताने से साफ़ इन्कार किया। तब ब्रजलाल ने धमकाना शुरू किया और मुझे सख्त गालियां देने लगा इस पर मैंने उसे जूतों से खूब पीटा और गांव के बाहर निकलवा दिया और जब तक वह गांव के सरहद के बाहर न निकाला गया तब तक वहां के तमाम लड़के उस पर मट्टी और कांकड़ फेंकते चले गये।

"फिर मैंने ब्रजलाल का कुछ हाल न सुना पर मैं इतना जानता था कि वह दरबार में मेरा दुश्मन है क्योंकि मैंने कई मर्तबः एक पड़ोसी पर जिस ने मेरे सरहद पर दस्तन्दाजी की थी और मेरा कटा हुआ अनाज ले लिया था नालिश की, मगर कुछ सुनवाई न हुई। रफ़्ते रफ़्ते यह तकलीफ इस दर्जे को पहुंची कि मैंने इस के दफ़ा करने के लिये यह इरादा किया कि चंद लोग दरबार में जाकर मेरे तरफ़ से अर्ज़ी दें। मगर यह भी लाहासिल हुआ। ब्रजलाल ने जो इज्जत और इख़्तियार में ज्यादतर रौनक अफ़रोजी पर था मेरे लोगों को ज़ाहिरा रोक दिया। मुझ पर साफ़ साफ़ अपने गांव की पटेली

छीनने का इलज़ाम लगाया गया और ब्रजलाल ने एक शख्स को खड़ा कर दिया कि वह असली पटेल के खानदान से है और इस कदर लिहाज़ और मदद इस शख्स की की गई कि मेरे लोग लाचार हो कर मेरे पास निहायत खोफ से लौट आये।

उस वक्त से मेरे फ़र्ज़न्द! आज पांच बरस का अर्सा हुआ कि मैं अपने नागपुर के दोस्तों की ज़बानी सुनता आता था कि वह मेरे लिये कांटे बो रहा है। उन लोगों ने मुझे खबर दी कि चन्द लोग मेरे मारने के फिराक में लगे हैं सो मैं किसी अजनबी शख्सको गांवमें आने न दूं और न बगैर काफ़ी मुहाफ़िज़त के कहीं बाहर निकलूं। इस्से किसी तरह का खलल, जैसा कि तुम जानतेही हो, मेरे रोज़गार मे आजतक न पड़ा जिसमे कि मेने कभी कोई गलती न की, मगर दूसरे मामलातों मेभी मैं होशियार रहता था। पर इतनी खबरदारी करने पर भी हमलोग उसके चंगुल मे आगये मगर खुदा हमे इसके हाथों से आज़ादी दे।

कुछ दिनों तक तो यह ज़ालिम न दिखलाई दिया आखिरकार एक दिन आया और मेरे वालिद को फिर उसी तरह तसदीया पहुंचाया मगर यह सब बेफ़ायदा था उनने हरगिज़ कुछ न बतलाया पर चिल्लाकर उस्से यों कहा कि बुज़दिल! काफ़िर! तू मुझे मारने की ताकत हरगिज़ नही रखता मगर याद रखियो, मैं तुझे खबरदार किये देता हूं कि अगर एक मर्तबः भी मैं इस कैदखाने के बाहर निकलूंगा तो इनशाअल्ला तुझे दिखलाऊंगा कि कोई सादिक मुसलमान क्योंकर बदला ले सकता है"।

मेरे वालिद के इन फज़ूल धमकियों पर ब्रजलाल हँसा और हमे छोड़ कर फिर चला गया।

इसी तरह तीन महीने हम लोग उसी कैदखाने मे पड़े थे। एक रोज़ हमारे पहरे का एक सिपाही, जिसे मेरे वालिद ने बहुत कुछ देने का इकरार किया था और जो हमारे मुकद्दमे की बेइनसाफी देखकर हैरत मे था, इस बात पर राज़ी हुआ कि वह मेरे वालिद की अर्ज़ी को नागपुर के उस साहूकार के पास जो मेरे वालिद का जान पहिचान था और जो हमारे गांव के मालगुज़ारी का बन्दोबस्त करता था पहुंचा देगा।

वह साहूकार हमारी यह हालत सुन कर निहायत तअज्जुब मे हुआ और फौरन् हम लोगों के छुड़ाने के फ़िक्र मे लगा। मगर यह कोई आसान बात न थी, वृजलाल ने कचहरी के दीवान के कान भर दिये थे और हमारे दोस्त की कोई कोशिश कामयाब न होने पाती थी। आखिरकार उसने हमारा मामला नागपुर के एक बहुत बड़े साहूकार के यहां पेश किया जो खुद हमारी तरफ़ से दीवान साहब के पास गया। हमें खबर लगी कि कल हम लोगों को दरबार मे हाज़िर होकर उन इलजामों का जवाब देना होगा जो हम पर लगाये गये हैं। दूसरे दिन ठीक वक़्त पर सिपाही लोग हमे पेशकार के मकान पर ले गये जहां वह हर किस्म के नालिश और फर्यादों को जो उसके यहां होती थीं सुनता था।

उस वक़्त नारायण पण्डित एक नौजवान शख्स था मगर तमाम लोग उस की बड़ी इज्ज़त करते थे। वह निहायत नेक वो दियानतदार समझा जाता था और दोनों तरफ़ के सवालात और जवाबों को साथ सब्र के सुन कर फैसला करता था। मगर हम लोगों का जानी दुश्मन वृजलाल उसका वफ़ादार मुतसद्दी था और इस चरबज़ुबानी से काम करता कि उसके ज़ुल्म ज़ाहिर न होने पाते थे।

"वृजलाल ने मेरे वालिद को ये इलज़ाम लगाये। उसने कहा कि इस रियासत के कानून के मुताबिक़ कुल हिसाब माल व मिलकियत का उन साहूकारों और दौलतमंद रईसों का जो वग़ैर "औलादनरीना" के इन्तकाल करते हैं सरकार मे दाखिल होना चाहिये और यह बात खूब ज़ाहिर है कि जयसुखदास निहायत दौलतमन्द व इज्ज़तदार रईस था और उसें सिवाय दो तीन लड़कियों के कोई बेटा न था जिन्हे उस माल मे से एक रुपया भी तब तक छूने का कोई इख़्तियार न था कि जब तक सरकार का हिसाब तै न हो जाता सिवाय इसके यह शख्स बोरी का हकदार पटेल नहीं है और जो शख्स पुराने पटेल के खानदान से है वह उस ज़मीन और दर्जे का दावा करता है। वृजलाल ने पण्डित नारायण पेशकार से आखिर मे यों कहा कि धर्मावतार जो जो सुलूक इस शख्स ने मेरे साथ किये हैं मैं उन्हे बयान नहीं

करता। मैं दो मर्तबः इसके गांव में गया मगर दोनों मर्तबः मेरी ऐसी बे इ-ज़्ज़ती की गई कि उसे याद करने से मेरा खून उबल उठता है। मेरा वहां का जाना फकत सरकार की भलाई के लिये था और अगर उस वक्त मैंने इस बात की शिकायत की होती तो हुजूर का गज़ब उसी दम इस शख्स और इसके खानदान पर ऐसा गिरता कि यह नेस्तो नाबूद होगया होता। मगर मैं अपने रंज को खा गया पर जब देखा कि इसने हुजूर मे हाज़िर होने से बारबार इनकार किया और जेसुखदास के माल का अहवाल पूछने के लिये जो२ शख्स भेजे गये थे उनकी बारबार बे इज़्ज़ती हुई और सरकार की हुकुम उदूली हुई तो मैंने लाचार होकर इसके गिरफ़्तारी और सज़ा का हुक्म दिया।

"या अल्ला, या आल्ला," मेरे वालिद ने कहा "सरकार, यह सरासर झूठ है, अल्ला गवाह है कि मैंने कभी किसी सरकारी हुक्म की उदूली नहीं की जो ज़ाब्ते से मेरे पास पहुंचा हो। क्या मैंने इस की पैदाइश के पहिले सरकार का निमक नहीं खाया है? और फिर यह कौन है जो हुजूर के साम्हने रियासत के इस पुराने नौकर को इतनी गालियां दे। अगर मुझे इजाज़त दी जाय तो मैं हुजूर के साम्हने सब अहवाल बयान करूं जिससे हुजूर को साफ़ मालूम हो जायगा कि मेरा कुछ भी कुसूर नहीं है बल्कि जो कुछ बदसलूकी इस शैतान ने हुजूर के गुलाम के साथ की है उस्के लिये इस्को सख़ सज़ा दी जावे।

पण्डित ने कहा "बहुत अच्छा कल्ल तुम्हारा बयान सुना जायगा इस अर्से में तुम्हारे लिये बेहतर होगा कि जो कुछ तुम अपने जवाब में बयान किया चाहते हो उसे सिलसिलेवार लिखकर तयार करो ताकि तुम्हारा इज़हार साफ़ और मुख़सर हो और जल्द आसानी के साथ समझ मे आ जावे"।

मेरे वालिद ने अर्ज़ की कि हुजूर मै चोरों के माफिक कैद न किया जाऊं बल्कि मैं इन दो साहूकारों को अपनी ज़मानत देता हूं कि जिस वक्त मुझे हुक्म हो मैं हाज़िर होऊं। गोकि ब्रजलाल ने बहुत कुछ उज्र किया कि इनकी ज़मानत न होनी चाहिये मगर हमारी ज़मानत मंजूर हुई और हम लोग अपने उन दोस्तों के साथ रवाने हुये—चलते वक्त मेरे वालिद ने कनखियों से ब्रजलाल की तरफ़ देखकर अपनी मोछें टेढ़ीं और माशअल्ला,

इनश्राश्राज्ञा करते हुये रवाने हुये मगर व्रजलाल भी इसके जवाब मे गजब की निगाहों से देखता था जिस्से उसके दिल का गुस्सा और बुग़्ज़ साफ़ ज़ाहिर होता था।

"शाम होते होते तक एक खर्रा फारसी ज़ुबान में व्रजलाल के तमाम ज़ुल्मों का अव्वल से आखिरतक लिख कर तमाम हुआ और हम उसे लेकर दरबार में इस उम्मेद से पहुंचे कि हम लोग व्रजलाल को उस नामुनासिब सलूक के लिये जो उसने हमारे साथ किया था, वहां ज़लील होते देखेंगे। मगर इससे हमने बड़ी नाउम्मेदी पाई। हमारी अर्ज़ी नारायण पंडित ने पढ़ी और मुकद्दमे का फैसला लिखना शुरू किया—फैसला यह हुआ कि मेरे वालिद को कैद करने में व्रजलाल ने अपने इख़्तियार से बाहर काम किया जयसुखदास और उसके खानदान पर तसदीया पहुंचाना उसकी सख़्त गलती है क्योंकि हिसाब देखने से मालूम हुआ कि कोई दावा उस शख़्स के बरख़िलाफ़ नही है।

सिवाय इसके मेरे वालिद ने व्रजलाल के साथ यह बदसलूकी की कि उसे अपने गांव से निकलवा दिया, इससे रियासत की बे इज़्ज़ती हुई क्योंकि उसने उस शख़्स को हिसाब देने से इनकार किया था जिसे वह जानता था कि सरकार की तरफ़ से आया है और उसे इस बात का मजाज़ है; और बहुत दिनों तक इस हुक्म की तामील न होने दी।

मेरे वालिद उसका जवाब देने लगे थे कि उनके दोस्त उस साहूकार ने रोका और कहा कि लड़ाई से आधी जान लेकर निकलना पूरी जान गवाने की बनिस्बत बहुत बेहतर है। बस खामोश रहो और समझो कि तुम्हारी जान बच गई क्योंकि आज तक कोई भी इस बदज़ात बदमाश के जाल से नही बचा, सो खुदा का शुक्र अदा करो कि उसने तुम्हे इसके चंगुल से रिहाई दी"।

मेरे वालिद को, व्रजलाल से उस बदसलूकी करने के लिये कुछ जुरमाना हुआ, मगर उन्होने इसे अपनी फतहयाबी समझी और वह मामला ते हो गया।

मुझे वह नेक सलाह हर्गिज़ न भूलेगी जो उस ज़ईफ साहूकार ने मेरे वालिद को चंदरोज़ बाद दी जब कि हम लोग कुछ दिनों तक उसके यहां मेहमान रह कर अपने गांव के लिये रवाना होने लगे।

उसने कहा "पटेल जी, मैं उस ब्रजलाल से अच्छी तरह वाकिफ हूं वह अपना बदला लेना हर्गिज़ न भूलेगा। आप देखही चुके हैं कि अपने मुरब्बियों और अफसरों के साम्हने तो वह गऊ बन जाता है मगर पीछे शेर की तरह उसका दिलरहता है और वैसेही काम भी करता है, और ऐसा इख़्तियार उसने हासिल किया है कि कोई भी उसका साम्हना करने की हिम्मत नहीं करता। दर हक़ीक़त आप उसके चंगुल से बहुत अच्छी तरह निकल आये। अगर आपका मामला हमारे सेठ ने न उठाया होता तो आप तब तक उसी कम-बख़्त कैदखाने में पड़े रहते कि जब तक उसने आपको हजारों तरह की तकलीफ और तसदीये देकर आप की मौत से अपना बुग्ज़ निकाला होता"।

"शुक्र अल्ला"! मेरे वालिद ने कहा "मगर अब तो मैं महफूज़ हूं"।

"हरगिज़ नहीं" उस साहूकार ने कहा आपको निहायत होशियारी और खबरदारी से रहना होगा, जहां आप जावेंगे वहां उसके भेदिये आप को घेरे रहेंगे और उनसे बचने के लिये आप को हद से ज्यादा खबरदारी औ होशियारी और दूरन्देशी करना होगा। आप के जान की कसम पटेलजी! मेरे कहने पर गौर कीजिये वरन पीछे फकत पछतावा हाथ रहेगा"।

मेरे वालिद ने कहा कि मैं आपके इस दोस्ताना और नेकसलाह को हर्गिज़ न भूलूंगा बल्कि इसे दिल पसन्द शरबत की मानिंद पी जाऊंगा। मगर अब महम्मद जी पटेल तक पहुंचने के लिये ब्रजलाल के बाज़ू बहुत लम्बे और मज़बूत होने चाहिये।

चंदरोज़ बाद हम लोग रुखसत लेकर मकान को वापस आये, मगर जैसी पेशगोई की गई थी चंद माह बाद अजनबी लोग अकसर हमारे गांव में दिखलाई पड़ने लगे और ताज्जुब की बात है कि मेरे वालिद हम लोगों की इस आर्ज़ू पर कि वे चिराग लगने बाद मकान ही पर रहें मुतलक ख्याल न करते थे। वे अकसर शेखी से बहुत रात गये मकान पर आया करते और

उन लोगों को मुसाफिर बतलाते थे। होते २ इन अजनबी आदमियों के बार बार आने जाने से मेरी वालिदा को यहां तक खौफ़ हुआ कि उन्होंने मुझ से यह इलतजा की कि तू दिन के वक्त भी हमेशा अपने वालिद के साथ रहा कर और चिराग़ लगने के बाद जितना जल्द हो उन्हें साथ साथ खेत से मकान पर ले आया कर। मैंने कहा बहुत अच्छा, और बहुत दिनों तक मैंने ऐसही किया मगर एक दिन रात के वक्त "खुदा करता मैंने उस कमबख्त रात को न देखा होता" हम लोगों को इस मशवरत मे देर लग गई कि कल उसे क्योंकर काटने का बन्दोबस्त करना चाहिये सो मकान लौटने मे देर लग गई।

कुछ दूर तक एक पासही के गांव के चंद लोग हम लोगों के साथ २ आये, मगर हमारे गांव से आधकोस के फासले पर से वे लोग दूसरी तरफ़ को चले गये। बाकी का रास्ता (अगर हम लोग सीधे रास्ते से चलते तो) महफूज़ न समझा जाता था क्योंकि जहां तक बनता चिराग लगने के बाद उस रास्ते से कोई मुसाफ़िर न चलता था। मैंने उस दूसरे रास्ते से चलने की ख़ाहिश की मेरे वालिद ने देखकर यों कहा कि "यह रास्ता नही है इधर से आधे घंटे की देर लगेगी। गोकि मुझे यह ख्याल था कि वह रास्ता महफूज़ नही है पर तोभी मैंने कुछ न कहा। मगर दोस्तो ! किस्मत को कौन टाल सकता है? अगर अल्ला ताला की मर्ज़ी है कि फलाने शख्स की मौत हो तो इंसान की दूरन्देशी क्या काम कर सकती है ? खैर हम लोग उसी नज़दीक के रास्ते से चले और बहुत जल्द उन खेतों में पहुंचे कि जिनके दोनों तरफ़ घनी झाड़ियां लगी थीं और इन्हीं में से वह पेचीदा रास्ता पड़ता था। रोशनी इस कदर काफी न थी कि रास्ता साफ़ नज़र पड़े मगर हमे इस सड़क पर कदम २ का रास्ता मालुम था। हम लोग चलेही जाते थे कि मुझे झाड़ियों के पीछे कुछ चमचमाहट सी मालुम पड़ी गोया किसी ने बंदूक का पलीता बाला हो।

मैंने वालिद से कहा देखिये हम लोगों पर राहज़नी हुआ चाहती है झाड़ी के पीछे कुछ लोग मालुम पड़ते हैं। देखिये तीन पलीते बल रहे हैं"।

उसने कहा "तुम बेवकूफ हो गये हो, ये जुगनू हैं। क्या तुम मेरे फर्जन्द हो-कर डर गये? इतना कहते ही थे कि हमारे पीछे तीन आवाज़ें तड़ातड़ हुईं। वालिद तो मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़े उनके ज़बान से एक भी लफ़्ज़ न निकला। मेरे पीठ और कमर मे सरदी छाकर सुन्न हो गई और तेज़ दर्द मालूम होने लगा; पैरों की भी यही हालत हुई। दो चार क़दम चलने के बाद मै भी गिर पड़ा मगर मुझे होश थी। तीन शख्स झाड़ियों में से झपट कर नंगी तलवारें लिये हमारी तरफ दौड़ते हुये आये। जब देखा कि हम दोनों में से कोई नहीं हिलता तो उनमे से एक ने मुझे पीठ के बल उलट कर मेरा चेहरा देखा। मैंने अपनी आंखे बंद करलीं क्योंकि मैं जानता था कि अगर आंखे खुली रहेंगी तो उसी दम मारा जाऊंगा।

जो शख्स मेरे पास खड़ा था बोला, "यह वह नहीं है हमलोगों ने धोखे से दूसरों को मारा"।

इतने में दूसरा शख्स पहुंचा और देखकर बोला —

"बहुत ठीक है यह छोटा शैतान उसका बेटा है बस यकीन रखिये कि यह दूसरा जो पड़ा है इसका बापही होगा" इतना कह वे सब मुझे छोड़ कर चले गये और मेरे वालिद के पास पहुंचे मगर मैं देख न सका कि उन्हों ने क्या किया। मैं ख्याल करता हूं कि उन्हों ने मेरे वालिद का इम्तिहान किया होगा क्योंकि उनमें से एक यों चिल्लाया अलहमदुलिल्लाह! हम लोग कामयाब हुये! ख्याल करने की बात है कि मुद्दतों के घात के बाद आज यह हाथ लगा है, यह बुड्ढा कुत्ता तो बड़ा कौवा था"।

तीसरा शख्स जो अब तक खामोश था बोला "आप लोगों को मेरा शुक्र गुज़ार होना चाहिये। अगर मैं इसके पीछे पीछे ऊख के खेत तक न गया होता और इसके मकान का नज़दीकी रास्ता खोज कर न निकालता तो अभी महीनों तक आप लोग इसकी इन्तिजारी खींचते जिस्से मेरी तबीयत उकता गई थी। तो बस अब यहां ठहरना वाजिब न होगा। माधो हम लोगों को नागपूर तक पहुंचने में मदद देगा सो जितना जल्द हो सके उसके पास चलना चाहिये, मैं जानता हूं कि घोड़े तयार होंगे"।

फिर मैं बेहोश होगया और कुछ न सुन सका कि उन लोगों ने क्या कहा और क्या किया। मेरे ज़ख्मों में निहायत सख़ दर्द था और मैं ज़मीन पर पड़ा लोटता था, उस रात सर्दी भी निहायत शिद्दत से पड़ी थी और मैं इस क़दर अकड़ गया कि हिलना दुश्वार था। मैंने कोशिश की कि मैं किसी तरह अपने वालिद की लाश के पास जो उलटे मुंह ज़मीन पर पड़ी थी पहुंचूं, मगर पहुंचना तो दूर था मैं हिल भी न सकता था। मैं पड़ा पड़ा उसी दर्द से कँहर रहा था। करीब ही मैंने राह चलते लोगों की आवाज़ सुनी और बहुत ज़ोर से चिल्लाया मगर किसी ने कुछ न सुना। कुछ देर बाद मैंने सुना कि हम लोगों की तलाश में बंदूकें छूट रही हैं मगर मुझ मे इतनी ताक़त न थी कि मैं उनका जवाब दूं। मैं क्या कर सकता था क्योंकि मै कुंचलेहुये कीड़े की मानिन्द ज़मीन पर पड़ा था। कभी तो होश होती और कभी फिर बेहोश हो जाता था गोया कभी मरता और कभी जीता था। मेरे दोस्तो! मैं क्यों कर आप लोगों को उस कम्बख़ शब का हाल बयान करूं। मैं बेहोशी से जागा तो देखता क्या हूं कि चंद लोग मशाल लिये मेरे सिरहाने खड़े बातें कर रहे हैं। मालुम हुआ कि ये गांव के मज़दूरे हैं और बहुत देर से हम लोगों को तलाश करते हैं। मुझे होश न थी कि उन्होंने क्या कहा और क्या किया, मगर मेरे वालिद की लाश को देखते ही वे सब के सब चिल्ला २ कर रोने पीटने लगे, फिर मुझे एक कम्मल मे लपेट कर गांव को उठा लाये और मुझे मेरे वालिद के मकान के दरवाज़े पर सुला दिया।

यारो! आप सभी लोगों को औरतों के रंज देखने का मौका मिला ही होगा कि जब किसी के मकान में वालिद, भाई या फर्जन्द के सिर मौत आती है; आप लोग जानतेही हैं कि उस वक़्त औरतों का नाला भरना और आह मारना मर्दों के कलेजे को पानी २ कर डालता है। मेरे वालिद की लाश पहुंचने के पेश्तर तक न कोई रोना पीटना था और न चीख़ने की आवाज़ आती थी। मेरी वालदा एक कोने में बैठी इधर उधर तड़फ रही थीं और आहिस्ते २ मेरे वालिद का नाम लेती थीं और बार २ सीना पीटती थीं) मेरी बहिन मेरे पास बैठी थी और बार २ मेरा गला पानी से तर

करती थी, मैं वहीं पड़ा था, गोकि मुझ में बोलने की ताक़त न थी मगर मैं सब लोगों की बातें जो मेरे आस पास बैठे थे खूब सुनता और समझता था। गांव की चंद बुढ्ढी औरतें, उस सर्द हठा में जो रात के वक़्त सन्नाटे के साथ दालान में आती थी, मेरी वालिदा के पास बैठी हुई धीरे धीरे कुछ काना-फूसी कर रही थीं। दीवार के ताख में एक छोटा सा चिराग़ जल रहा था जिसकी झिलमिलाती हुई रोशनी में कभी एक और कभी दूसरा मजमा नज़र आता था और सभों की परछांहीं मेरे ऊपर और चारों तरफ़ उछलती फिरती थी। मेरा दिमाग़ घूमने लगा यहां तक कि मुझे यह मालुम पड़ता था कि गोया वे सब शैतान के गरोह हैं और मेरे वक़्त के पेश्तर मुझे अज़ीयत देने के लिये आये हैं।

उस वक़्त कुछ ज़्यादातर बेहोशी होने लगी सो मैंने कहा "बहिन ज़रा बूआ को तो बुलाइयो मेरा दम निकला चाहता है और अब मेरी मौत आ गई, वह लड़की जो मुझे बहुत प्यार करती थी रोकर कहने लगी "नहीं नहीं भैया तुम हमें छोड़ कर कहां जाओगे। फकत थोड़ा सा ज़ख्म लग गया है, हज्जाम आता है वह गोली निकाल देगा और हकीम जी धोने के लिये पानी गरम कर रहे हैं। तुम जल्द आराम हो जाओगे"।

वह इतना कहती ही थी कि बाहर का दालान मशालों की चमक से तमाम रौशन हो गया, और थोड़ी देर बाद चार शख्स मेरे वालिद की लाश लिये हुये आहिस्ते २ अंदर आये। मैं हिम्मत करके उठ बैठा और दीवार से उठँग गया इतने में लाश जो खून से तराबोर थी लाकर रक्खी गई। रक्खी गई न कहना चाहिये क्योंकि ज्यों ही चारो लोग जो लाश को उठा लाये थे ज़मीन पर आहिस्तो से रखने लगे त्योंही कम्मल का एक कोना हाथ से छूट गया और लाश इस ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि सिर की धमक हर शख्स के कलेजे और रग में सनसना उठी।

कुछ देर तक तो किसी ने भी चूं न किया मगर जब खून देखा गया और मेरे वालिद का मरना घर वालों को मालूम हुआ तो सख्त रंजोअलम और रोना पीटना शुरू हुआ। मेरी वालदा के साथ तमाम बुढ्ढी औरतें लाश के

पास आ खड़ी हुईं और चिल्ला २ कर यों रोने लगीं कि जिसके सुनने से कलेजा फटा जाता था। जो शख्स लाश उठा लाये थे इन्हें भी इसका सदमा पहुंचा और बाहरी भी लोग जो जमा थे सब के सब रोने व चिल्लाने लगे यहां तक कि नाले व मातम् से गोया आसमान फट उठा। मैं बहुत चिल्लाता था कि मेरी कोई सूने मगर उस शोर में कौन किसकी सुनता था। यक बयक शोर व गुल मौकूफ़ हुआ और गांव के काज़ी के आने से खामोशी छा गई। उसने आतेही लाश को देखा फिर मुझे पूछा कि कहां है। लोगों ने मुझे दिखला दिया उसने मुझ से पूंछा "कहो किसने यह काम किया है, ? तुम्हारा शक किस पर है ? कहो तुम्हें अपनी जान की कसम, ऐसा न हो कि देर होने से वे सब निकल जावें"

मैने कहा " इटारी का माधो पटेल" मगर उन सभों के पास घोड़े तयार थे वे सब दूर निकल गये होंगे अब उनका पीछा करना लाहासिल है"।

उसने बड़ी बेसब्री के साथ पूछा क्या कहा! किसके पास घोड़े तयार थे ? कौन निकल गये होंगे ? अच्छा ज़रा ठहर कर तुम यह तमाम माजरा बयान करने की कोशिश करो कि यह क्योंकर हुआ" ?

मुझे दम लेने की ताक़त न थी मगर मैंने किसी तरह तमाम बयान मुख़तसर में कह सुनाया।

एक शख्स बोल उठा—"अल्ला जानता है कि यह काम माधो ही का है सो आज सूरज निकलने के पेश्तर हम लोग उसका गांव खाकस्याह कर डालेंगे "।

दूसरे ने कहा—"यह काम रहीम खां का है"।

रहीम खां मेरे वालिद का साला था और उन दोनों में सख्त दुश्मनी थी।

मेरी वालदा ने कहा "कौन रहीम खां का नाम लेता है ? उस कमबख्त के नाम लेने ही से ज़बान में छाले पड़ते हैं। उस को भी खुदा यही नतीजा दे"—इतना कहकर उसने फिर अपना मातम् शुरू किया।

उनमें से एक शख्स जो मेरे पास बैठा था बोल उठा "सुनते हो, इस औरत ने क्या कहा ? अगर रहीम खां शुबहे से बरी होता तो यह इस तौर बद्दुआयें न देती"।

"खामोश" मैंने इतने ज़ोर से चिल्ला कर कहा कि जितनी मुझे में ताक़त थी—मैं खूब जानता हूं कि यह किसका काम है क्योंकि मेरा उस पर कामिल और मज़बूत शुबहा है। माधो पटेल की इसमें मुतलक दस्तन्दाज़ी नहीं है वह बुज़दिल है, गोकि रहीम खां मेरे जईफ़ वालिद से दुश्मनी और नफ़रत रखता था मगर यह उसका भी काम नहीं है, ये दोनों बेकसूर हैं। यह उस शख्स का काम है कि जिस के पास ब सबब उस के ऊंचे दर्जे के हम गरीब लोग नहीं पहुंच सकते, और जिसे फ़क़त अल्ला ताला की मरज़ी उस हालत को ला सकती है कि जो उसने मेरे वालिद की की है; मेरी मुराद उस मलऊन संगदिल वृजलाल से है"। मैं बोलते २ बेदम हो गया और थक कर चुप कर गया।

"कौन अभी बोल रहा था" मेरी वालिदा ने सिर उठा कर कहा "मुझे अपने लड़के की सी आवाज़ मालूम पड़ती है"।

मैंने कहा "अम्मा मैं यहां हूं"। सो वह मेरे पास आई"।

तू यहां है! तू जीता है! बुज़दिल कहीं का! क्या तू अपने वालिद की खून से भरी हुई लाश मकान के अंदर देखने आया है? तू कहां था? तू भी उन के साथ न मर गया? क्यों मैंने बार बार इस बात से खबरदार न किया था कि तू दम भर भी अपने जिद्दी वालिद का साथ न छोड़ियो जो किसी की भी सलाह न सुन कर रात को ज़रूर बाहर रह जांयगे"।

मैंने कहा "अम्मा मैं इस आप की बात का जवाब नहीं दे सकता मगर मैं उन्हीं के साथ था, देखो मैं भी उन के साथ ही गिरा था, गोकि मैं उसी वक़्त न मर गया पर मुझे मालूम पड़ता है कि फ़ौरन् मेरी मौत होगी"—इतना कह कर मैंने अपना अंगरखा खोला और गोली का सूराख दिखलाया जिस में से कभी कभी एक दो बूंद काले खून की टपक पड़ती थी, जब उस ने मेरी यह हालत देखी तो फ़ौरन् मेरे पांव पर गिर पड़ी और सिसकियां भर के कहने लगी "बेटा तू बुज़दिल नहीं है। तू हरगिज़ बुज़दिल नहीं! तूने अपने वालिद के हिफ़ाज़त में अपना खून बहाया है सो बस अब सिवाय अल्लाह की मर्ज़ी और इन की किस्मत के मैं और कुछ नहीं कहती। किस्मत को कौन

टाल सकता है? मुझ बिचारी बुढ़िया के लिये मालिक और बेटा दोनों का हाथ से जाना गज़ब है।

इतना कह कर वह रोती हुई मेरे पास से चली गई और लाश की बगल में जा कर बैठ रही।

रफ़े २ पड़ोसी लोग भी एक एक कर के चले गये। हुजलाल का नाम कान में पड़ते ही सब की ज़ुबान बंद हो गई, यहां तक कि थोड़े ही अर्से में सिवाय मेरी वालिदा और बहिन के जो लाश की पास बैठी थीं कोई भी घर में न रहा।

मेरी बहिन बिचारी एक छोटी लड़की थी मगर वह मेरे पास बैठी बैठी मेरे कंधे और पैर को गर्म पानी से बराबर तर करती रही यहां तक कि जमा हुआ खून पिघल गया और मुझे सेहत मालूम पड़ने लगी। मेरी तबीयत चिराग़ से निहायत घबड़ाती थी पर कोई मेरी बात न सुनता था। गोकि मैंने सैकड़ों तरह की मौत देखी हैं मगर ऐसी मौत मैंने कोई भी आज तक न देखी कि जिस से मैं अपने वालिद के मरते वक़्त के चेहरे से मुशाबहत दे सकूं। उनकी शकल में चुटकियां पड़ गईं थीं, होंठ दोनों नीचे ऊपर खिंच गये थे जिस से दांत सब दिखलाई पड़ते थे; आंखें बड़ी २ खुली हुईं थीं जो बंद न हो सकीं; हवा से हिलती हुई रोशनी के सबब आंखे चमक उठती थीं जिस से जान पड़ता था कि वह खौफ़नाक लाश गोया नीचे ऊपर देख रही है। मैं अपनी आंखें वहां से न हटा सका और वहीं पड़ा २ देखता था जब तक सुबू न हुई।

हमारा हज्जाम किसी नज़दीक के गांव में ज़रूरी काम से गया हुआ था सो जब वह आया तो उसने मेरे जख़्मों को अच्छी तरह देखा भाला। एक गोली जो कंधे को छेद कर गले में घुस गई थी कुछ देर तक वह चिमटे से उसे जख़्म मे तलाश करता रहा पर आखिर बड़ी तकलीफ के बाद उसने उस गोली को गिरफ़्तार किया और खींच कर बाहर निकाला। मुझे कुछ आराम मालूम पड़ा मगर खून बहुत बहता था। पैर का जख़्म फक़त गोश्त ही मे था। मुझे थोड़ी अफीम घोल कर पिला दी गई, दूसरे दिन सुबह को

जब मेरी आंख खुली तो मुझे आगे के बनिस्बत राहत जान पड़ती थी क्योंकि ज़ख़्मों मे दर्द तब तक होता ही था।

इस अरसे में लोगों ने मेरे वालिद को दफ़न कर दिया—मैं अकेला रह गया मगर मुझे अच्छी तरह मालूम था कि हृजलाल अपना बदला अपने दुश्मन के बेटे से भी लिये बिना ख़ामोश न रहेगा।

वह ज़ईफ़ काज़ी न तो कुछ कर ही सका और न उन खूनियों की गिरफ़ारी और सज़ा पाने की कोई तरकीब ही बता सका। सो हम लोग सब्र के गलीचे पर बैठ कर रंज का दम भरने लगे और जिस तरह हुआ अपनी तकलीफों को फरामोश किया। इसी तरह एक बरस तक कोई नई बात न हुई, मैं अपने वालिद के हक़ का जानशीन समझा गया। एक दिन यकबयक वही शख़्स जिसे हृजलाल ने मेरे वालिद के बख़िलाफ़ असली पटेल बनाकर खड़ा कर दिया था, हथियार बंद लोगों का एक गरोह साथ लिये हुआ हमारे गांव पर पहुंचा, मालूम हुआ कि उसे वहां की पटेली का हक़ सरकार से दिया गया है। गांववाले बिचारे निहायत कमज़ोर थे इस ज़ुल्म का मुक़ाबिला हरगिज़ न कर सके पस मुझे भी लाचार होकर अपना हक़ उस नये शख़्स के आने पर तर्क करना पड़ा। मेरी बहिन अपने ससुराल को चली गई थी, मैंने अपनी वालदा को उसी के यहां भेज दिया क्योंकि मेरा कोई घर बार न था। लाचार होकर मैंने अपना गांव छोड़ दिया और अपने वालिद के दोस्त उन साहूकारों के पास इस नीयत से चला गया कि शायद वे लोग कुछ मेरी मदद दरबार में कर सकें। मगर उन लोगों की भी निगाहें बदल गई थीं उन्हों ने कुछ भी मेरे लिये न किया बल्कि कहने लगे कि—

"हृजलाल का इख़्तियार बहुत ज्यादा है उसके साथ किसी तरह की दस्तन्दाज़ी करना तुम्हारे हक़ में अच्छा न होगा; इनसाफ़ की उम्मेद हरगिज़ न रक्खो क्योंकि तुम्हारे पास कोई कामिल सुबूत नहीं है और खून के इलज़ाम लगाने से तुम किसी तरह का सुबूत न पहुंचा सकोगे बलके उलटे तुम्हारी ही बरबादी होगी"। सो मैं बगैर किसी दोस्त आशना के इस दुनिया में अकेला रह गया। मेरी वालिदा को भी मरे एक मुद्दत होगई। मेरी बहिन हनोज़

ज़िन्दा है और उसके लड़के बाले भी हैं मगर गुणग्रतः बातों का उसे कुछ भी ख्याल नहीं है। कभी २ मैं उससे मुलाकात करने चला जाता हूं और वह मुझसे मुहब्बत और मेहरबानी के साथ पेश आती है। आप दोस्तों के सिवाय वही एक बशर है जो मेरी भलाई चाहती और मेरी खबर लेती है। वह समझती है कि मैं सरकार होलकर के यहां सिपाहियों में भरती हूं, इसके सिवाय न तो वह और कुछ जानती है और न जान सकेगी। शुक्र है अल्लाह का! कि मेरा दुश्मन मेरे हाथों से मारा गया और अब मुझे आसूदगी हुई क्योंकि मेरा बदला उतर गया, आप दोस्तों मे से चन्द लोग जब मेरा वक़्त आजायगा मुझे क़ब्र मे दफन कर देंगे। मैं भी कुछ बहुत दिन नहीं जीने का, क्योंकि मैं अपनी उम्र भोग चुका हूं। अब तक मैं फकत उसी काम के लिये जीता था जो मैंने कल रात को किया। आइंन्दा के लिये मुझे कुछ जोश नही है, और अब मुझे इस बात की कुछ परवाह नहीं कि कब यह ज़ईफ़ ठग अपना मकान ज़मीन के अन्दर बनावे। बस यही मेरा किस्सा है जो मैंने आप को सुनाया, आप लोगों ने इसे बड़े ग़ौर से सुना और मैंने साहब ज़ादा को खुश किया, मेरा इरादा पूरा हुआ और अब मै भी आसूदा हुआ।

साहब! हमारे तमाम काफिले को उस ज़ईफ़ शख्स का अहवाल सुन कर निहायत ताअज्जुब हुआ और सबके सब उसकी उस मुसीबत के लिये जो उस पर पड़ी थी दिलासा और सब्र देने लगे। मगर उसके बयान से मुझ पर सब से ज़्यादा असर हुआ क्योंकि मुझे पक्का यकीन होगया कि हमारे सब कामों पर अल्लाताला का हाथ रहता है, ऐसा असर मुझे अपने वालिद के तवारीख से भी न हुआ था। ये दोनों अजीब मिसालें थी खास कर इस ठग का बयान निहायत अजीब वो गरीब था। यह दरहकीक़त जान पड़ता था कि जहन्नुम—रसीदः होने के पेश्तर हजलाल अपने ज़ुल्मों की सज़ा पाने के लिये इसी दुनियां में हमलोगों के हाथ में भेज दिया गया कि वह उसी शख्स के हाथ से मारा जावे जिसे उसने इस कद्र तकलीफ़ पहुंचाई थी। फिर मैंने अपने तईं कहा कि "आज से लेकर कोई शख्स यह न कहेगा कि अमीर अली काम पड़ने पर पीछे हट गया। मैं अपने वालिद से भी बढ़ जाने की

ज़ाहिर करूंगा और दुनियां को यह मालूम होगा कि मैं उसकी बुराइयों के लिये गोया कोड़ा होकर पैदा हुआ हूं। कोई भी मेरे हाथ से न बचेगा; मैं अपनी कसम निबाहने की भरशक कोशिश करूंगा और तमाम खलकते इनसान के बखिलाफ़ संगदिली का जंग उठाऊंगा और इनशाअल्ला! दुनियां यह देखेगी कि अमीरअली ने अपने आदमियों से ऐसे २ काम लिये जो इन दिनों के कामों से कहीं बढ़ कर होंगे और जो उन पुरानी बातों का मुकाबला करेंगे जिन के किस्से कहांनियां हमलोग सुनते आये हैं।

उस दिन से मैंने काफ़िले के गुरू के मातहत तरबीयत पाना शुरू किया यह निहायत पुराना ठग था जो बसबब जईफ़ी के कुछ कमज़ोर भी हो गया था मगर काफ़िले के तमाम पुराने लोगों का यह बयान था कि आज तक ऐसा "भटोट" याने फांसी लगाने वाला ठग देखने में न आया था। वह जात का हिन्दू और कौम में राजपूत था और गोकि उस का बदन सूखा साखा और पतला दुबला था ताहम् उस की ऊंचाई, कंधों की चौड़ाई, और नसों की तेज़ी से बआसानी जान पड़ता था कि किसी वक्त में यह शख्स निहायत मज़बूत और ताकतवर था मासिवाय इस के अगर उस की रूमाल लगाने की चालाकी और फुरती का लिहाज़ किया जाय तो जो जो बातें उस के बारे में हम लोग सुनते थे हरगिज़ गैरमुम्किन् न होंगी। अब तक मुझ से और उस से सिवाय मामूली साहब सलामत के कोई खास रब्त ज़ब्त न थी, सो मैंने अपने वालिद से इलतिजा की कि वे मुझे अपने साथ ले चल कर उसके सुपुर्द कर दें और उससे यह भी इलतिजा कर दें कि वह "भटोटी" का फ़न मुझे अच्छी तरह सिखला कर पुख़्ता करे।

वालिद मेरे इस सलाह से निहायत खुश हुये और फौरन् मुझे हुसैन और रूपसिंह के सुपुर्द किया—यह रूपसिंह वही पुराना ठग था जिसका बयान मैं आप से कर चुका हूं, यह हुसैन के गरोह में शरीक था।

वालिद ने कहा कि "कुछ दिनों तक मैं तुम्हें न देखूंगा तुम उन्हीं लोगों के साथ रहो, और जब मेरे पास फिर आओ तो ऐसा हो कि मैं तुम्हें दूसरे मामले में जो हम लोग हाथ में लेवें शरीक होने के लिये दिलोजान से तयार और राज़ी पाऊं"।

उसके दूसरेही दिन मैंने मुस्तैदी से काम सीखना शुरू किया। रूपसिंह कुछ मंतर वग़ैरह पढ़ पढ़ कर मुझ पर फूंका करता था। गोश्त की कौन कहे चार दिन तक मुझे सिवाय दूध के कुछ भी खाने को न दिया गया। कुलहाड़े के सामने न मालूम कितनी कुर्बानियां की गईं, हर एक सगुन का ख्याल किया जाता था और जब मैं शाम के वक़्त रोज़ीना सफ़र के बाद दरख़्त के तले बैठता तो जितने परिन्द उसपर आकर बैठते सभों से कोई न कोई नतीजा निकाला जाता। और सुबू के वक़्त जब हम लोग सफ़र के लिये रवाना होते तो हरतरहके चरिन्द और परिन्द के आजाने से जो रास्ते में पड़ते सगुन निकाला जाता। मैं अज़खुद उन बातों के जानने के लिये निहायत जुस्तजू रखता जो मुझ से या मेरे लिये की जाती थीं मगर मेरा वह ज़ईफ़ गुरू मुझे कुछ न बतलाता था।

उसने कहा "मेरे फ़र्ज़न्द। जब मैं तुम्हारी उम्र का था तो ये सब रसूमात मेरे साथ इसलिये किये जाते थे कि मेरा दिल पत्थर सा कड़ा हो जावे और मैं बेख़तरे और बेकलेजे हो जाऊं, और ऐसा चुस्त वो चालाक होऊं कि जो शख्स मेरे हाथ तले आवे वह मेरे फंदे से निकल न सके, मै अपने दुश्मनों से हमेशा खबरदार रहूं, किस्मतवर होऊं और नाम पैदा करूं। इन सब कामों में मैं हमेशा कामयाब रहा हूं। दो शख्स और जिन पर मैंने ये मंतर पढ़े थे बराबर तरक्की कर रहे हैं और बहुत जल्द जमादारी के उहदे पर कायम होने वाले हैं; तुम्हारी भी यों ही तरक्की होगी, इसलिये इस बारे में कुछ सवालात मत पूछो। तुम्हें फक़त इतना ही जानने से असूदा होना चाहिये कि तमाम बातें मेरी मर्ज़ी के मुताबिक जैसा होना चाहिये हो रही हैं, मैंने आजं तक कोई भी बदशुगून तुम्हारे बारे में नहीं देखा।

पांचवें दिन सुबह को रूमाल मेरे हाथ में दिया गया; अव्वल तो मैं चमेली के फुलेल से नहलाया गया इसके बाद मेरे पेशानी पर ईंगुर का टीका लगाया गया और तब मैं देवी का भगत याने भटोट के नाम से मशहूर हुआ।

उस बुड्ढे ठग ने मेरे हाथ में रूमाल देते वक़्त हँस कर कहा "हां एक बात तो मैं भूलही गया जो असल में खास चीज़ है, याने तुम्हें इसका इस्तिमाल

बताना रह गया था और यह मेरी थोड़ी सी खास हिकमत है जो मैं तुम्हे आसानी से समझा दूंगा और तुम भी जल्द उसे सीख लोगे।

इतना कह के उस ने रुमाल अपने हाथ में लिया और बीच में एक चांदी का टुकड़ा रख कर एक कोने पर बड़ी सी गांठ लगायी; इसे तो उस ने बांये हाथ में पकड़ा और दूसरा कोना दहिने हाथमें इतनी दूर पर लिया कि जिस में एक आदमी का गला अच्छी तरह आ जावे, हाथ बंद करने पर हथेली ऊपर की तरफ थी।

उसने कहा "अब इसे खूब ख्याल रक्खो जब तुम ने पीछे से रुमाल डाल कर कसा तो फौरन् अँगूठे की गांठ को नरेटी के दोनों तरफ दबाओ और दोनों तरफ ज़ोर से झटका दो जैसा उस वक्त सुबीता हो और अगर यह काम होशियारी के साथ किया जाय तो फ़ौरन् मौत होगी।

मैंने कपड़े को अपने हाथ में लिया और जैसे उसने बतलाया था गिरफ़ किया मगर यह उसकी तबीयत के मुताबिक न हुआ।

"यों नहीं" उस ने कहा "मुझे दो ताकि मैं तुम्हारे गले पर लगा कर दिखला दूं"।

मैंने हँस कर जवाब दिया "नहीं नहीं शायद आप को ख्याल हो कि मैं मुसाफिर हूं और आप मेरा कामही तमाम कर दें, मगर मैं अब अच्छी तरह समझ गया"।

रूपसिंह ने कहा अच्छा तो तुम्हीं मुझ पर दिखलाओ, मैं तुम्हारे हाथ के रखते ही बतला दूंगा कि तुम्हें आया या नहीं"।

मैंने वैसाही किया इस पर वह सिर हिला कर खूब हँसा और बोला—

"यों नहीं—यों तो तुम एक बच्चा भी न मार सकोगे"—जब तुम्हारे गले में हाथ दे कर मैं बतलाऊंगा तभी तुम समझोगे"।

गोकि यह बात मुझे नापसन्द थी मगर मैं राज़ी हो गया। ज्यों ही उस का सर्द हाथ मेरे गले में लगा मेरा खून चक्कर मारने लगा और तमाम बदन सनसना उठा, लेकिन उस ने किसी तरह का नुकसान न पहुंचाया और मैं अपनी गलती समझ गया। उसने मुझे बार बार यह दिखलाया और जब मैंने

भी उस पर आज़मा कर बतलाया तो उस ने कहा कि अब तुम्हें अच्छी तरह आ गया मगर थोड़े रब्त की ज़रूरत है।

"इन्शाअल्ला !" मैंने कहा—आगे सैकड़ों ही मौके ऐसे पड़ेंगे, एक मर्तबः आग़ाज़ होना चाहिये फिर मुझे मुतलक खौफ़ नहीं है। जैसे शेर एक मर्तबः इन्सान का खून चख लेता है तो उसे फिर दूसरा जानवर पसन्द नहीं आता और वह हमेशा इन्सान ही के तलाश में रहता है वैसी ही मेरी भी हालत है"—दरहकीकत साहब! यह बात यों ही हुई; बेशक मुझे शेर की सी ख़सलत पड़ गई थी।

छठवां पर्व्व

नागपुर के बाकी मंज़िलों में ऐसी कोई भारी बात न हुई जो काबिल बयान हो, सिवाय इसके कि हमारे गरोह के चंद लोगों ने जो दूसरे सड़क से साथ ही साथ चलते थे थोड़े से फुटकर मुसाफिरों को मारा था मगर उनमें कोई बात ऐसी नही जो बयान करने के लायक़ समझी जाय सो अब मैं आप को साहब! अपने नागपुर के ख़ेमे का हाल, जहां हम लोगों ने डेरा खड़ा किया था, सुनाता हूं।

शहर के बाहर एक बहुत बड़ा तालाब है जिस के किनारे हमारे काफ़िले के बहुत से लोगों ने डेरा किया था। मेरे वालिद और चंद लोगों ने शहर में जाकर मकान लिया ताकि लूट के माल की बिक्री करके नक़द रुपया कर लिया जाय। यह कोई मुशकिल बात न थी क्योंकि ब्रजलाल का कुल माल जल्द बिक्री के लायक था सो उसके खरीदार शहर के सुनार और साहूकारों में जल्द मिल गये।

एक साहूकार से लेन देन के वक़्त मेरे वालिद अकसर कहा करते थे कि मैं अपने गांव के चंद लोगों के साथ हैदराबाद को जाता हूं जहां नीज़ाम सिकदरजाह के मातहत मेरे भाई नौकर हैं वहां जाकर इन लोगों की नौकरी तलाश करूंगा। साहूकार ने उसी दम हमारे साथ चलने की सलाह की और कहा कि अगर आप लोग रास्ते में हमारी हिफाज़त रक्खेंगे तो इसके

एवज़ में मैं आप और आपके आदमियों को निहायत खुश करूंगा क्योंकि मैं एक मुद्दत से इसी तलाश में था कि ऐसे अशराफ़ शख्स का साथ मुझे होवे कि जो कुछ साथियों के हमराह उधर जाता हो तो मैं भी उसके साथ चलूं।

साहब! उस वक्त़ वसबब मुल्क की गड़बड़ और जंग की शोहरत के ऐसा हो रहा था कि कोई भी बेकार शख्स जो अपने गांव के दस बीस लोगों को जमाकर के हिन्दोस्तान या दक्खिन के किसी राजा के दरबार में जा खड़ा होता तो उसकी भरती सिपाहियों में फौरन् हो जाती थी सेंधिया, होलकर पेशवा और कई एक राजों के पास भारी २ फौजे थीं जिनके सिपाहियों को अच्छी तनख़ाह मिलती थी सो उस जमाने में किसी और रोज़गार के बनिस्बत उन लोगों की नौकरी करना बेहतर था। नागपुर के रास्ते में ऐसे सिपाहियों के कई गरोह से हमारी मुलाक़ात हुई थी इसलिये हमारे काफ़िले में यह कोई नई या शुबहे की बात न थी, खसूसन् मेरे वालिद के मातहत में जो खुद सिपाही मालूम पड़ते थे, जिनका लिबास निहायत ज़र्क़ बर्क़ और हथियार लकीदक़ था। उनके सवारी का घोड़ा बहुत बड़ा और निहायत ऊंचा था और जिसवक्त वे शहर से निकलते तो बहुतेरे ठग मुहाफ़िज़त में उनके साथ चलते थे, उनकी शकल ठीक उस किस्म के सिपाहियों की सी थी जो उन्हों ने अपने तईं साहूकार को बतलाया था।

मेरे वालिद साहूकार के इस कहने पर फौरन् राज़ी हो गये और कहा कि दो तीन दिन के बाद मैं आपके साथ चलूंगा और हैदराबाद तक बराबर आपकी हिफ़ाजत रक्खूंगा। एक दिन मेरे वालिद और उस साहूकार से तखलिये में मुलाकात हुई और उसने कहा कि मैं बहुत कुछ नक़द माल व जवाहिरात और सौदागरी का असबाब अपने साथ हैदराबाद ले चलता हूं जहां इनके फरोख्त से अच्छा मुनाफ़ा हाथ लगने की उम्मेद है। न कि सिर्फ़ इतनाही बल्कि उसने वह सब माल वालिद को दिखला भी दिया; और आप ख्याल कर सकते हैं साहब! कि मेरे वालिद के इस बयान पर हमारे काफ़िले में किस क़दर खुशी हासिल हुई।

इस गरज़ से कि हमारे काफ़िले की सूरत वो शबाहत सिपाहियाना जान

पड़े मेरे वालिद ने चंद बंदूक, तलवार और ढाल वग़ैरह खरीद कर उन लोगों को बांट दी जिनके पास में हथियार न थे, और दरहक़ीकत जब सब के सब एक कतार में खड़े होते थे तो एक निहायत खूबसूरत जमाअत जान पड़ती थी और चूं कि यह चढ़ाई बहुत भारी और आलीशान थी इसलिये इसके ठग लोग सब जवान और बदन से निहायत मज़बूत चुने गये थे। उन सभों को उस एकरार नामें की इत्तिला भी दे दी गई थी जो मेरे वालिद और साहूकार के बीच ते पा चुकी थी और यह भी आगाही कर दी गई थी कि जहां तक मुम्किन हो वे लोग सिपाहियाना औ जंगी शानोशौकत रक्खें किस्सा कोताह यह कि उन्हें इस बात की हिदायत अच्छी तरह कर दी गई थी कि सफ़र मे लोग ठीक मातहत सिपाहियों के मुआफिक बर्ताव रक्खें।

ये सब बातें शाम को हुई थीं और रात को हमारे खेमे में निहायत उम्दा जल्सा हुआ; लूट की उम्मेद जिसे वे लोग दस्तयाबही समझते थे उन्हें खुश रखने के लिये काफ़ी थी। चन्द रंडियां भी शहर से बुलवा ली गई थीं सो वह तमाम शब उन्हीं के मुजरे और नाच में गुज़रते हुई।

तमाम दिन हमलोग साहूकार के आने की इन्तिज़ारी खींचते रहे और बाद चिराग़ जलने के वह एक सफ़िरी गाड़ी में मय दो या तीन नौकर और उतनेही टट्टू के जिन पर उसकी छोलदारी और असबाब वगैरह लदा था आया, उसके साथ दस बैल और दो लद्वाड़े भी थे। सब सहित उसको मिला के आठ आदमी थे।

अमरावती के रास्ते में हमारी और उसकी बहुत कम मुलाकात होती थी, कभी कभी शाम के वक़्त मेरे वालिद और हुसैन उसके डेरे में जाकर बैठते जिस सबब से मेरी भी मुलाकात उस्से हो गई। थी वह बदन का मोटा और लम्बा जवान था सो मैंने ख्याल किया कि मेरे पहिले आज़माइश के लिये अगर यह शख़्स मुझे मिलता तो निहायत उम्दा होता। मैंने अपना यह ख्याल वालिद को सुनाया और वे मुझ से निहायत खुश हुए।

उन ने कहा "मेरा इरादा पेश्तरही से यह था कि मैं तुम्हें इसका भटोट मुकर्रर करूं क्योंकि यह बदन से इतना मोटा है कि कुछ भी रुकावट न कर

सकेगा और आसानी से तुम्हारा शिकार हो जायगा, क्योंकि तुमने अपनी आ जमाइश अभी तक नहीं की है॥"

पस उस वक़्त से मैं उसे अपना पहिला शिकार समझा और इसी निगाह में उसे हमेशा देखता भी था।

मैं हर रोज़ अपने उस्ताद के पास जाता ताकि अपने रोज़गार की कोई नई बात उससे सीखूं और जिस जिसतरह वह रूमाल का लगाना मुझे बतलाता था मैं इसी तरह बराबर रब्त करता था। एक दिन उसने यह इरादा किया कि मैं किसी अकेले मुसाफ़िर को भुलावा देकर खेमे में लेआता हूं और तुम पहिले अपना हाथ उस पर आज़मा लो, मगर मैंने इसमें ताअम्मुल किया और कहा कि नहीं मुझे अपनी ताक़त का पूरा एतबार है और चूंकि मैं उस साहूकार को अपना पहिला शिकार मुक़र्रर कर चुका हूं इसलिये अब किसी दूसरे को मैं नहीं चाहता।

साहब मैं सफ़र का अहवाल छोड़ जाता हूं क्योंकि रास्ते में कोई वारदात काबिल बयान न हुई थी। हमलोगों ने शहर में पहुंच कर बाज़ार में अपना डेरा किया। शहर की ज़ाहिरा रौनक और इकबाल देख कर मैं हैरत में आगया मगर यह कोई ताअज्जुब की बात न थी क्योंकि यह वह मुकाम था कि जहां हिन्दुस्तान की तमाम सौदागरी और दस्तकारी की चीजें लाकर दक्खिन के शहरों में भेजी जातीं थीं और जहां हर किस्म का मसाला दवाई व दीगर सौदागरी का सामान दक्खिन से आकर हिन्दोस्तान के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में फ़रोख़्त के वास्ते जाता था।

यह शहर साहूकारों के मकानात और बड़ी २ दूकानों से तमाम भरा हुआ था और बाज़ार में ऐसी २ चीजें देखने में आयीं जो मैंने कभी ता उम्र न देखी थीं बजुज़ इसके बम्बई के अंगरेज़ी सौदागरों का वह माल दिखलाई दिया जो मैंने कभी ख़्वाब वो ख्याल में भी न देखा था सो मैं अकसर हर रोज़ अपने वालिद के साथ शहर में घूमता क्योंकि मुझे उन सब चीजों के देखने का निहायत शौक़ था।

इस जगह साहूकार को बसबब अपने कारोबार के कुछ दिन अटकना

पड़ा इसके ख़तम होने पर हमलोग फिर आगे रवाना हुए, यहां से तीन श-ख़्स और साहूकार के साथ हुए, जो, चन्द बैलों को जिनके ऊपर निहायत बेशक़ीमत बनारसी माल मसलन् किमख़ाब वगैरह लदा था हांकने के लिये नौकर रक्खे गये थे। इतने लोगों के बढ़ने से हमारे तजवीज़ में किसी तरह का ख़लल न पैदा हुआ क्योंकि हमारे साथ साहूकार के रहने के सबब हुसैन के दल के लोग अब तक हमराह थे, और अगर वे न भी रहते तो भी मेरे वालिद के साथ इतने लोग थे कि वे सब बग़ैर तरद्दुद के ज़ेरदस्त हो जाते।

अमरावती से मंगलूर तीन मंज़िल है। मेरे वालिद ने कहा कि "वहां मैं इस मामले को ख़तम करने की जगह तजवीज़ करूंगा। मुझे याद आता है कि मंगलूर से थोड़ीही दूर आगे कुछ पहाड़ियां और खंदक ऐसे हैं कि जिनमें इन लाशों के दफ़न कर देनेका हमे अच्छा सुभीता हाथ लगेगा। मियां हुसैन! ज़रा अपने लोगों में दरयाफ़्त तो करना कि उनमें से कोई उस मुक़ाम को जानता है क्योंकि ऐसे शख़्स को लुवाहयों के साथ भेजना निहा-यत ज़रूर होगा"।

पहिली मंज़िल याने बोम नामी गांव पर पहुंच कर इस बात की पूछ हुई और मालूम हुआ कि तीन शख़्स कुल रास्ते से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं बल्कि इस बात की शिफ़ारिश करते हैं कि वहां एक ऐसा मुकाम है जहां इस कार के अंजाम करने में गफ़लत हरगिज़ न करना चाहिये। मेरे वालिद और हु-सैन ने उनसे बहुतेरे सवालात किये और उन सभों ने भी उस मुक़ाम का ऐसा साफ़ बयान किया और वह इस कार के लिये ऐसा काबिलपसन्द स-मझा गया कि फौरन् वहीं पर इसका अंजाम देना करार पाया और उन लोगों को इस शर्त पर इलाहिदा इनाम देने का वादा हुआ अगर वे लोग इस कार में कामयाब होंगे।

मुझे मालूम हुआ कि अब मेरे काम का मौक़ा आया चाहता है और चंद घंटों के बाद मेरा भी हक़ इन्हीं लोगों के बराबर समझा जायगा जो पेश्तर दूसरों को मार चुके हैं।

साहब। शायद यह कमज़ोरी का बायस हो लेकिन उस वक्त से लेकर जहां तक मुमकिन होता मैं साहूकार की निगाह से दूर रहता। मैंने उसे रास्ते में एक या दो मर्तबः देखा होगा मगर उसको देखतेही न जाने क्यों मुझे कुछ सनसनाहट सी आ जाती और बेवकूफ़ के मुआफ़िक मैं यही चाहता कि मैं लौट कर गांव को चला गया होता। मगर हटने का कोई मौक़ा न था, मैं नाम पैदा करने वाला था और खास कर अपने वालिद की निगाह में इज्ज़त हासिल करने को था। लौट जाना भी ग़ैर मुमकिन था और किसी किस्म की कमहिम्मती दिखलाना भी अपने तईं लोगों की निगाह में बेक़द्र और हक़ीर करना था। इसलिये सिवाय हिम्मत बांधने के मुझे और कोई तद्बीर न सूझती थी और दरहक़ीक़त जब साहूकार मेरे रूबरू न रहता तो मुझे अपना काम करने में किसी किस्म की बेदिली न होती बल्कि वही नाम पैदा करने की ख़ाहिश ज़ोर करती थी।

चलते चलते हम लोग मंगलूर पहुंचे। यह बहुत बड़ा शहर तमाम मुसलमानों से भरा है, और एक निहायत क़दीमी पीर मीर हयात कलन्दर की ज़ियारतगाह के लिये मशहूर है। उनके क़ब्र की निहायत ताज़ीम की जाती है, सो यह बात निहायत वाजिब और मुनासिब समझी गई कि हम लोग अपनी चढ़ाई के इस कामयाबी के लिये शुक्रिया अदा करें। सो मेरे वालिद मुझे और हुसैन को साथ लेकर मय चंद दूसरे मुसलमानों के उस क़ब्र पर गये और बादज़ां खतम करने उन सब रसूमातों के जो वहां के मुल्लाओं में से एक ने बतलाया था हम लोग बैठकर दो शख्सों से बात चीत करने लगे। मेरे वालिद ने इत्तफ़ाक़िया कुछ इशारा हुसैन से किया जिसे उन लोगों ने पहिचान लिया, इससे मालूम हुआ कि ये लोग भी ठग हैं। मैंने ख्याल किया यह निहायत अजीब बात है कि हमारे मज़हब के पाक मुल्ला लोग भी हमारे ही मुआफ़िक ठग हैं!!! मगर उन से चंदा गुफ़्तगू के बाद मैंने देखा कि मेरे वालिद ने उनका बहुत कम लिहाज़ किया।

ज़ियारतगाह की सीढ़ी उतरने के बाद जब हम लोग बाहरी दालान में पहुंचे जहां बहुत से लोग ठहरे हुये थे तो मेरे वालिद ने हुसैन से कहा "ये

लोग ठग नहीं हो सकते मगर अपने आदमियों को खबरदार कर देना चाहिये कि वे इन सभों से ज्यादः रब्त ज़ब्त न करें मैं ख्याल करता हूं कि जितना इन लोगों ने देखा है उस्से ज्यादः ये नहीं जान सकते मगर जो इन्हें उस साहूकार का पता लगेगा जो हमारे साथ है तो शायद वे लोग ज्यादा कोशिश करें"।

हुसेन ने कहा "आप सही फर्माते हैं बेहतर होगा कि अपने आदमियों को इस बात की आगाही कर दी जावे"।

इन सब लोगों को इहतियात कर दिया गया, और ऐसा करना बहुत वाजिब हुआ क्योंकि बादज़ां हम ने सुना कि वे मुल्ला लोग इसकी निहायत जुस्तजू करते थे और यह न समझ सकते थे कि क्यों हम लोग बगैर किसी खास ग़रज़ के इतनी दूर आये और अभी आगे जाने की खाहिश रखते हैं, और इसमें कोई शक नहीं कि अगर हम लोगों ने वह कारवाई न कर के उनसे अपना इरादा ज़ाहिर किया होता या उनकी मदद चाही होती तो या तो उन लोगों ने हमें गांव के सरकारी अफ़सरों के हाथ गिरफ्तार करा दिया होता या लूट का इस क़दर ज्यादा हिस्सा तलब करते जो न तो हम उसे दे ही सकते और न बसबब खौफ़ के इन्कार कर सकते।

ज़ियारत के बाद हम लोग उसी मुकाम पर लौट आये जहां कि हमारा डेरा था और देखा कि साहूकार का एक शख्स हमारे आसरे बैठा है। उसने कहा कि आज सेठ जी अपने एक दोस्त के साथ वहीं ठहरेंगे और आप के खेमें को न आ सकेंगे मगर उन्होंने आप से यह इल्तिजा की है कि आप अपने चंद सिपाहियों को हिफाजत के लिये वहां भेज दीजिये, और चूंकि वे वासिम के शहर को जो यहां से कुछ दूर है अपने एक दूसरे दोस्त से मुलाक़ात करने जाने वाले हैं इस लिये उन का इरादा है कि वे बहुत तड़के डेरा कूच करें और चूंकि यह मंज़िल दूर दराज़ है इसलिये हम लोगों को अलस्सबाह रवाना होना चाहिये ताकि आधे रास्ते में एक गांव पर ठहर कर कुछ आराम भी कर लिया जावे।

मेरे वालिद को यह बात नापसन्द हुई कि अपने चंद लोग गांव में भेजे

जांय क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि गांव के ठगों में से कोई शख्स उन्हें पहिचान जावे, ताहम उन्हें लाचार होकर यह बात मंजूर करनीपड़ी सो चंद लोग गांव में शब के वक्त भेजे गये ताकि उनके पहिचाने जाने का मौका हाथ न आवे। इस अर्से में कब्र खोदने वालों की गरोह ने जो हमारे पेश्तर रवाना होने को थी सब तयारी कर ली चिराग़ जलने के बाद वे चौदह शख्स और वे दोनों ठग जो उस जगह से खूब वाकिफ़ थे हमराह रवाना हुये वे लोग उस जगह को निहायत पसन्द करते थे और बयान करते थे कि वे छोटी मोटी पहाड़ियां नहीं हैं बल्कि कहीं कहीं ज़मीन के उठ जाने और कहीं २ दब जाने से वहां बेशुमार गड्हे ज़मीन में पड़ गये हैं। उनका यह भी बयान था कि रास्ता निहायत पथरीला और छोटे मोटे चश्मे भी बहुत पड़ते थे जिन के दोनों किनारों पर बराबर झाड़ियां लगी हैं सो इनमें से किसी एक में जहां पानी न हो 'बिल' याने कब्र तयार की जायगी। उन लोगों से यह भी कह दिया गया था कि चंद लोगों को थोड़ी दूरी पर बैठा देना ताकि उन्हें देख कर हम लोग सब अपने २ जगह पर हो जावें और इशारा होते ही यकवयक टूट पड़ें।

इस बात की ख़बर सब को हो गई थी कि साहूकार मेरे हिस्से पड़ चुका है और बहुत से लोग मेरे आस पास इस नीयत से जमा होकर देख रहे थे कि मैं अपने काम का पहिला नमूना कैसा दिखलाता हूं, हर एक शख्स मुझे दिलासा और बढ़ावा देता था और मुझे भी एक तरह की हिम्मत और कुव्वत जान पड़ती थी। ज्यों ज्यों वक्त करीब आता था मेरा दिल उस नौ जवान बहादुर सिपाही के मुआफिक जोश खाता था जो गुस्से में अपनी तलवार की औव्वल चमक देखा चाहता है। वालिद मेरी इस हिम्मत और खुशदिली को देख कर अंदर ही अंदर खुश होते थे, ज़बान से तो वे कुछ भी न बोलते थे मगर उनके दिल की खुशी उनकी आंखों से झलकती थी, वे मुझे दिलासा देने की निगाह से देखते और मैं दिलोजान से इस कोशिश में था कि उन्हें मायूस न करूं।

तमाम गरोह में इस मामले के तै करने की जरूरत का असर फैल रहा

था क्योंकि वे लोग छोटे २ मजमों में जमा होकर तमाम लोगों के बारे में बात चीत कर रहे थे, गोकि हर एक शख्स जानता था कि उसके या उसके साथी के लिये फलां शख्स मुकर्रर हुआ है ताहम् वे लोग इस बात का मश-विरा कर रहे थे कि देखें फलां शख्स अपने कार में कैसी फुर्ती और उमदगी दिखलाता है। रफ़े २ वे सब लोग जाकर आराम से लेट रहे, मेरे वालिद और हुसेन दोनों चले गये फ़क़त मैं अपने छोटे खेमें के बाहर बैठा हुआ था कि इतने में रूप सिंह मेरे पास आया और बैठ कर बोला—"बाबा कैसी तबीयत है? तुम्हारा दिल तो मज़बूत और तबीयत ठंढी है न? मैंने कहा "जी हां दोनों दुरुस्त हैं, मेरा दिल कभी नहीं फिर सकता और मेरी तबीयत भी ठंढी है चाहे मेरी नब्ज देख लीजिये"।

उसने मेरा हाथ धर के कहा "नहीं नहीं, ठीक है तुम्हारी नब्ज बहुत दुरुस्त चलती है और ऐसाही चाहिये भी। मैंने इसके पेश्तर बहुतों को पहिली आज़माइश के लिये तयार होते देखा है मगर तुम्हारे सा संजीदा और खामोश शख्स न पाया यह सब उन्हीं मंत्रों का असर है जो तुम पर पढ़े गये हैं और उन्हीं रसूमातों का सबब है जो तुमारे लिये किये गये थे।

मैंने कहा "शायद हो मगर मैं ख्याल करता हूं कि मैं इन मंत्र और रसूमातों के बगैर भी ऐसाही रहता"।

उसने जबाब दिया—"अभी तुम लड़के हो इनका असर नहीं जानते, भवानी तुम्हारी इस मग़रूरी को माफ़--करे भला क्या मुझ से भी बढ करके कोई मग़रूर होगा--जो शुद्ध राजपूत कुल से पैदा हूं। क्या मैंने लड़कपन हीं से जंगली जानवरों के खुद मारने या मारे जाने में मदद नहीं दी! मगर जब इन्सान मेरे साम्हने आया और उसके मारने के लिये फक़त एक रूमाल मेरे हाथ में दिया गया तो मैं कांप उठा और बहुत दिनों बाद तक इस बात की कोशिश न कर सका – मगर अभी एक रसूम तुम्हारे साथ और बाकी है जिसमें हरगिज़ गफ़लत न करना चाहिये, जाओ अपने वालिद, हुसेन और बद्रीनाथ को बुला लाओ ताकि वे भी हाज़िर रहें।

हम सबलोग फौरन जमा होगये और गुरू एक पासही के खेतमें हम लोगों

को ले गया। वहां जाकर उसने अपना मुंह उस जानिब को फेरा जिधर हम लोग सफ़र करने को थे और हवा में हाथ जोड़कर यों पुकार के कहा "हे काली महाकाली! यदि तेरी इच्छा हो कि हमारे साथ का यात्री तेरे इस नये भक्त के हाथ से मारा जाय तो हमें थिबाऊ का सगुन दिखला"।

हम सब चुप चाप खड़े थे और तअज्जुब की बात है साहब! कि उस वे वक्त में एक गदहा दहो ने हाथ रेंका, सो रूपसिंह निहायत खुश हुआ और बोला "कहिये आज तक किसी भक्त की मंजूरी ऐसी हुई थी जो प्रार्थना के साथही सगुन हुआ हो"।

"शुक्र अल्लाह"? मेरे वालिद ने कहा "अब यह पूरा भगत हुआ बस अब यह कामयाब भी होगा। आप को फकत गांठ लगाना बाकी है"।

गुरु ने कहा कि "जब मैं लौट कर चलूंगा तो लगा दूंगा" सो जब हम लोग खेमे में पहुंचे तो उसने रुमाल लेकर पेश्तर की गांठ को खोला और एक चांदी का टुकड़ा उसमें रख कर फिर से गांठ लगाया और मुझे हाथ मे देकर कहा-"अब इस पाक हथियार को लो और इस पर भरोसा रक्खो, काली भवानी की कृपा से यह तुम्हारी मर्ज़ी के मुताबिक़ काम करेगा"।

मैंने उसे दहिने हाथ मे ले लिया और बड़ी खबरदारी से लपेट कर अपने कुरते में रख दिया ताकि कहीं खो न जाय और काम पड़ते ही तयार रहे। कुछ देर तक हम लोग इधर उधर की बातें करते थे और तब कालीन पर लेट रहे ताकि एक झपकी ले लेवें; हम लोग सोये हुये थे कि एक शख्स ने गांव से आकर ख़बर दी कि साहूकार चलने को तयार है और उसने मुझे इसलिये भेजा है कि मैं आप लोगों को खबर करदूं।

हमारे गरोह के लोग फौरन् उठ बैठे और अपने २ जानवरों को लादकर सड़क पर उसके आसरे जा खड़े हुये। सौदागर भी थोड़ीही देर बाद आगया और हम सब लोग बाहम् रवाना हुये।

रात खुशनुमा और रास्ता निहायत साफ था; हम लोग खुशी बाखुशी चले जाते थे। लूट की उम्मेद जो हमारे हाथ लगने को थी, और वह हिकमत अमली कि जिस्से यह माजरा अौवल से हम लोग इन्तिजाम कर लाये थे

हर एक के दिल को इस कदर जोश बख़शती थी कि हम लोगों को इसका अंजाम देना निहायत फ़ख़ का काम था नकि फकत उसी मुल्क में बल्कि हिन्दोस्तान के ठगों में भी जिनकी मुलाकात हमारे लौटने पर होगी।

हम लोग अंदाज़न् दो कोस निकल गये होंगे कि आगे के लोगों से इस बात की कानाफूसी होने लगी कि जासूसियों में से एक शख़्स जिसे हम पेश्तर भेज चुके थे हमारी तरफ़ आ रहा है। मेरे वालिद ने उसे पहिचाना और पूछा "बिल मंझे ह"? (बिल तयार है?)।

उसने कहा "मञ्झे ह" (याने तयार है) आप साम्हने की छोटी पहाड़ियां देखते हैं न? जैसा कि मैं आप से पेश्तर अर्ज़ कर चुका हूं एक छोटासा चश्मा उनमे से बहता है, और जमादार साहब! ऐसी बिल हमने आज तक कहीं न बनाई थी आप देखियेगा तो कहियेगा कि हम लोगों ने क्या काम किया है"।

वालिद ने पूछा "यहां से कितनी दूर होगा"?

उसने कहा "अनक़रीब आध कोस के। यहां से कुछ दूर आगे बढ़ के पथरीला रास्तामिलता है और घाटी तक बराबर ऐसी ही सड़क है-बस उसी घाटी में बिल बनी है" इतना कह के वह उन लोगों में जा मिला।

सब लोगों को चुपचाप इत्तिला करदी गई कि अपनी २ जगह पर होजावें, और जो शख़्स जिसके सुपुर्द हुआ था उसके पीछे एक या दो ठग जैसा मौक़ः था जा लगा। रास्ते में बड़े २ पत्थर जान बूझ कर रख दिये गये थे कि जिस्से साहूकार के बैल और लद्दवाहे चलते २ रुक गये, इतने में साहूकार की गाड़ी भी पहुंच गई और सब के एक जगह जमा होजाने से उनको बाआसानी ज़ेरदस्त करने का सुभीता होगया। इन सब तयारियों से मेरी हिम्मत जोश मे आगई और तबीयत फड़कने लगी मैंने रुमाल को मज़बूती के साथ गिरफ़ कर लिया और ख्याल करता था कि अब उनके मारने का इशारा दिया ही जाता है, मगर चूंकि रास्ते में कङ्कड़ पत्थर बहुत थे और दोनों जानिब घनी झाड़िया लगी थीं हम लोग आहिस्ते २ कदम बढ़ाते चलेही जाते थे; आगे के लोग भी धीरे २ चलते थे इस्से हम सब अपनी २

जगह पर लगी हुये हर लहमें उस मुक़ाम पर पहुचने की इन्तिज़ारी कर रही थे।

ज्यों ज्यों उन पहाड़ियों के पास पहुंचते थे, जंगल घना होता ही जाता था और बसबब चांदनी के दूना गुञ्जान मालूम पड़ता था; कितनेही ऐसे मुक़ामात गुज़र गये जहां मैं समझता था कि वह काम बश्रासानी ख़त्म हो सकता था। मगर यह मेरी गलत फ़हमी थी क्योंकि लुघाइयों ने जो मुक़ाम चुनकर पसन्द किया था वह निहायत क़ाबिल तारीफ और मौज़ू था।

इतने में एक शख्स साम्हने से आया और मेरे वालिद के कान में कुछ कह कर फिर वापस चला गया। इस से मेरा अन्देशा और भी बढ़ा। हम लोग एक ख़न्दक से पार हो कर एक करारे पर चढ़े जिस के नीचे मैंने ख्याल किया कि बिलाशुबहः यही जगह होगी। नहर के दोनों किनारे ऊंचे और ढालुयें थे और नीचे बेलों सो लिपटी हुई घनी झाड़ियां चारों तरफ लग रहीं थीं। चश्मे के सतह में चन्द दरख़ निहायत ऊंचे और पुराने लगे थे जिन की शाख चारों तरफ ऐसी फैली थीं गोया ज़मीन का बोसा ले रही थीं, उन की काली २ पत्तियों में से पानी की पतली धार चांदनी में यों चमक रही थी गोया कोई चांदी का सांप खेलता हुआ चला जाता हो। मैंने ख्याल किया कि इस जगह तो चाहे सैकड़ों चोर छिप रहें और ऐसे मुकाम पर मारे हुये बिचारे मुसाफिर का कौन पता पा सकता है?

मैं इसी ख्याल में चला जाता था कि मेरे वालिद ने आवाज़ दी—"होशयारी" और मैं फ़ौरन् खबरदार हो गया। यह इशारा हर एक भटोट के होशयार हो जाने का था। वालिद गाड़ी के पास जाकर साहूकार से बोले कि हमलोग चश्मे के पास पहुंच गये और किनारे पर इस क़दर ढाल और रास्ते में इस कदर पत्थर हैं कि अगर बहुत दूर नहीं तो उस पार तक आप पैदल तकलीफ़ करें तो बेहतर होगा, बस इतना कहना काफी था, वह फ़ौरन् बाहर निकल आया और किनारे पर खड़ा हो कर गाड़ी का उतरना देखने लगा। जब गाड़ी नीचे सहीसलामत पहुंच गई तो वह भी उतरने की तयारी करने लगा।

साहब! वे सब गोया मेरे निगाह के साम्हने दिखलाई पड़ रहे हैं। वे बैल, उनके हांकने वाले और ठग सब के सब उस छोटे चश्मे के सतह में आगे पीछे इधर उधर मिले मिलाये गड़बड़ मचाये चले जाते थे, और सब अपने २ जानवरों के चलाने के लिये शोर मचा रहे थे, लेकिन मैं आसानी से देख रहा था कि हर एक शख्स के पीछे एक एक ठग लगा हुआ इशारे की इन्तिज़ारी खींचता चला जाता था। वे लोग हम से थोड़ी दूरी पर नीचे थे और वह चश्मा इतना तंग था कि सब लोग उसके सतह में ख़ास कर गाड़ी के पहुंचने पर एक साथ खड़े न हो सकते थे। ऊपरी किनारे पर मेरे वालिद, हुसैन, मैं, साहूकार उस का एक नौकर और चन्द ठग लोग खड़े थे।

मैं निहायत बेकरारी के साथ इशारे की इन्तज़ारी कर रहा था, और उस मुहलिक रूमाल को हाथ में मज़बूती में गिरफ़ किये हुआ अपने औव्वल शिकार से सिर्फ एक फुट के फासले पर खड़ा था। मैं उस के पीछे जा खड़ा हुआ क्योंकि बगल में रहने के बनिस्बत वहां ज्यादा सुभीता था, मैंने देखा कि एक दूसरा ठग नौकर के भी पीछे जा लगा। साहूकार सड़क की तरफ़ एकादही कदम चला होगा और मैं भी उस के पीछे २ चला गया; मैं इस दिलोजान से उस के पीछे लगा हुआ था कि मेरा चलना मुझे खुद न मालूम पड़ता था ज्योंही उसने कृदम बढ़ाया मेरे वालिद ने आवाज़ दी "जैकाली!" बस यही इशारा था--

बात की बात मे मेरा रूमाल उसके गले में जापड़ा और मुझे मालूम पड़ता था कि गोया मुझमे कोई ग़ैब की ताकत आगई है। मैंने उसका गला मरोड़ दिया, दम भर तो वह छटपटाया मगर फिर गिर पड़ा। मैने अपना गिरिफ़ न छोड़ा वल्कि उस्की पीठ पर झुक पड़ा और कपड़े को यहां तक उमेठे रहा कि मेरा हाथ दर्द करने लगा, मगर उसने मुतलक जुम्बिश न की उसका दम गिरतेही निकल गया। मैने गिरफ़ छोड़ दी और उठ खड़ा हुआ, मारे जोश के गोया मैं पागल हो गया था यह काम इतनी आसानी से हुआ कि मेरा खून उबलने लगा मुझे मालूम पड़ता था कि गोया मैं ऐसे २ सैकड़ों साहूकारों को मार सकता हूं।

जो लोग बरसों से यह रोज़गार करते थे उनके मुकाबिले में एक दम से हो गया इस कार में मेरा सब से ओव्वल नम्बर उतरा क्योंकि मैने खास शख्स को अपना शिकार बनाया था, बहुतेरे ठग जो मुझे हनोज़ लड़काही समझते थे मेरी इस काररवाई पर निहायत खुश हुये और सब के सब मेरी तारीफ करने लगे।

मेरे वालिद ने मुझे शाबाशी दे कर आहिस्ते प्यार से कहा तुमने निहायत दिलेरी से यह काम किया है और फोरन् इसका इनाम पावोगे। अब हमारे साथ आओ हम लोग कब्रकी तरफ चलते हैं। लाशें तमाम जमा हो चुकी होगीं और मैं चाहता हूं कि मैं उन्हें अपनी चश्मोंके रूबरू दफन होते देखूं। इस काम की शोहरत हर तरफ़ फैल जायगी इसलिये जिस रास्ते से हम लोग सफ़र कर रहे हैं उसे छोड़ कर दूसरा रास्ता इख्तियार करना हम लोगों के लिये निहायत पुरज़रूर है। मैं उनके हमराह हो गया। हम लोग वहां से चश्मे के सतह पर पहुंचे और एक शख्स हमे कब्र के पास ले गया चंद लोग साहूकार की लाश को उठाकर हमारे पीछे पीछे चले। नदी के पार हो कर कुछ दूर जाने के बाद एक और सूखी हुई नदी मिली जो आकर उसी चश्मे से मिलती थी वहा चंद लोग हमारे गरोह के खड़े थे।

वालिद ने पूछा कहां है कब्र' ?

ऊपर खुदावन्द! मगर वहां घुटनों के बल चलना होगा क्योंकि रास्ता निहायत तंग है और कांटे बहुत तेज़ हैं"।

उसने कहा कुछ परवाह नहीं" इतना कह के वे उधरही को रवाना हुये।

दर्या के दोनो किनारे शायद दो या तीन गज़ ऊँचे होंगे और सतह सिर्फ इतनी चौड़ी थी कि दो शख्स बमुश्किल बराबर खड़े हो सकते थे। सिर के ऊपर बेल और दरख्तों की शाखें एकही से लपटी हुई थीं और दोनों बाज़ू इस क़द्र घने थे कि ऊपर से किसी शख्स का उतरना गैर मुम्किन था, ज्यों ज्यों हम लोग आगे बढ़ते जाते थे त्योंत्यों और भी घना झाड़ झंखाड़ मिलता जाता था यहां तक कि अब हर कदम पर कपड़ों को कांटों से छुड़ाने की ज़रूरत होने लगी। थोड़ी देर बाद लोगों की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी; हाथ

पेर के बल उस सूराख में से गुज़रने के बाद जो झाड़ियों में से काटकर बनाया गया था हम लोग कब्र पर पहुंचे।

वहां जाकर मैं क्या देखता हूं कि एक बहुत बड़ा गड़हा अनकरीब उस हथ्मे के चौड़ाई का खोदा हुआ तयार है और मट्टी जो उसमे से निकली थी उसी के चारों तरफ़ जमा है; लुवाई लोग वहां बैठे हुये उन खूंटो को तेज़ कर रहे थे जो जंगल से काटे गये थे; मगर बसबब तारीकी मुकाम के वे लोग बमुश्किल दिखलाई पड़ते थे क्योंकि माह की चांदनी घने झंखाड़ों के बाइस अच्छी तरह पहुंच न सकती थी। वे सब अपनी ही ज़बान में कुछ आहिस्ते २ बातें कर रहे थे जिसे मैने अब तक न सीखा था; वालिद ने पहुंचतेही लुघाइयों के सरदार से कहा।

"शाबास! तुम्हारी अक्ल निहायत तेज़ है और इसका लिहाज़ हिस्सा लगाने के वक्त बेशक किया जायगा; यह वह कब्र है कि गीदड़ों को भी जिसका पता न लगे। मैं फिर भी कहता हूं कि पीरखां! तुमने निहायत वाजिब काम किया है, बेहतर हुआ कि मैंने इसे खुद देख लिया ताकि मैं तुम्हारी लियाकत का ख्याल रक्खूं; मगर अब तेज़ी करना चाहिये रात बहुत कम रह गई है"।

उस ने कहा "खुदावन्द यह तो होही चुका हम लोग सिरिफ़ एक लाश की इन्तिज़ारी में बैठे हैं, सुना है कि वह भी आ रही है, भर देने का काम तो फ़ौरन् हो जायगा।

वह इतना कहही रहा था कि तीन शख्स जो बसबब बोझ के झुके जाते थे साहूकार की लाश को उठाये हुये पहुंचे। मेरे वालिद ने कहा कि "यह इन लोगों का मँजाहुआ काम है तुम चुप चाप खड़े देखा करो कि ये क्या करते हैं, क्योंकि यह सब तुम्हें देखना चाहिये ताकि तुम अपने काम की पूरी वाकफ़ियत हासिल करो"।

मै खामोशी से खड़ा देख रहा था कि इतने में साहूकार की लाश गड़हे के के मुंह पर खींच कर लाई गई और उसके अंदर ढकेल दी गई; नौकर की लाश की भी जो साहूकार के पास मारा गया था यही हालत हुई। उन सभों के पेट में सूराख पहिले ही कर दिये गये थे और वे तेज़ खूंटे उनमें ठोक दिये गये।

वालिद ने कहा "तुम देखतेही हो कि अगर ये सब खबरदारियां पेश्तर से न की जावें तो ज़मीन फूल जावे और गीदड़ इन सभों को निकाल ले जावें, मगर इस तौर से यह ग़ैर मुम्किन् है।

जब सब ख़तम हो चुका तो बहुतसे पत्थर जो जमा किये थे उन पर डाल दिये गये, तब कांटे भरे गये और बादजां बालू डाल कर ज़मीन चिकनी और बराबर कर दी गई।

पीर खां ने कहा "जमादार साहब! मैं समझताहूं कि बस यह काफ़ी होगा अब यहां से चलना चाहिये। यह कभी मुम्किन् नहीं कि कोई शख़्स सेठ जी या उनके आदमियों की तलाश करने के लिये यहां आवे और साहबज़ादे ने भी देख लिया कि हम लोगों ने कैसी होशियारी से अपना काम किया है।

मैंने कहा "बस काफ़ी है अगर कभी मौका पड़ जायगा तो मैं खुद लूघे का काम उमदा तौर से कर सकूंगा"।

वालिद ने मुझे अपने साथ चलने का इशारः किया। जब मैं चलने लगा तो देखा कि चंद लोगों ने कुछ सूखा हुआ बालू वहां डाल दिया। झाड़ी में जो सूराख़ हम लोगों ने जाते बक्त बनाया था वह लौटते बक्त दुरुस्त कर दिया गया और आखिरी शख़्स ने एक दरख़्त तोड़कर बालू में यों घसीट दिया कि जिस्से पैर के कुल निशानात जो नाले के बालू में पड़े थे बिलकुल मिट गये।

सातवां पर्व्व।

काफ़िले के बाकी लोग गाड़ी और लदेहुए बैलों के साथ कुछदूर आगे बढ़ गये थे, पीछे से हम लोग भी उनमें जामिले। थोड़ी दूरतक तो हम लोग घने जंगल ही जंगल चले गये वहां से निकलने के बाद एक ऐसे उजाड़ खुले मैदान में पहुंचे जहां कि चंद झाड़ियां इधर उधर दिखलाई पड़ती थीं। हम सब जमा होकर बैठ गये और आग बाल कर हुक्का पीने लगे, हर एक शख़्स अपने २ कारेअज़ीम का अहवाल बयान करने लगा और सब के सब लूट के हिस्से की उम्मेद पर निहायत खुश थे।

अब आगे बढ़ने का बन्दोबस्त करना कोई आसान बात न थी क्योंकि बासिम की शहर से आगे बढ़जाना निहायत ज़रूरी अम्र था; इस शहर में साहूकार के कई दोस्त रहते थे सो खतरा इस बात का था कि शायद वे लोग साहूकार को गाड़ी बैलों को पहिचान लेवें। वालिद ने सलाह दी कि जब तक सुबह न हो बराबर चले चलो और तब सड़क के एक तरफ़ होजाना चाहिये ताकि हम गैर लोगों की निगाह से दूर रहें। इसी तरह तब तक चले जावें जब तक बासिम के पार न हो लें। उसके बाद ठहर कर जिस कदर माल का हिस्सा लगसके लगा लिया जावे। वहांसे हुसेन के गरोह के लोग इलाहिदा होकर किसी दूसरे रास्ते से जिसे वे उमदा समझें आगे बढ़ें। पस हम लोग रवाना हुये और चंद गावों के पास से गुज़रते हुये सड़क के एक तरफ़ जाकर ठहरे; यहां दरख्तों की बारियां बहुत अच्छी लगीं थीं और बीच में एक निहायत उम्दा कूआं था जिसका पानी साफ़ और सुथरा बिल्लौर सा चमकता था।

पेश्तर इसके कि लोग सफ़र के बाद खाना पकाने में मशग़ूल हों सब के सब उस मुकाम पर जमा हुये और १।) का गुड़ खरीद कर तपौनी का रस्म किया गया जैसा कि मैं पेश्तर बयान कर चुका हूं। अब मेरा भी हक़ हुआ कि मैं सब भटोटों के साथ कम्मल पर बैठाया जाउं, क्योंकि मैं उनके मुकाबिल का हो चुका था। जब यह दस्तूर ख़तम् हुआ मैने वालिद के हुक्म से रुमाल की गांठ खोली और उस चांदी के टुकड़े को निकाल कर मय चंद रुपैयों के बड़े इज्ज़त के साथ गुरु का पैर छूकर उसकी नज़र की। यह आख़िरी रसम था। बस अब मैं पूरा भटोट होगया और दस्तूरके मुताबिक एक शख्स को मार कर अपने साथियों का शरीक समझा गया।

इसके बाद मेरे वालिद और हुसैन लूट का सब माल उठा लाये जिसके देखते ही लोगों की आंखे खुल गईं। रुपये और मोहरों के सिवाय बहुत से बेशक़ीमती जवाहिरात थे जिन्हें वह साहूकार हैदराबाद फरोख़ के लिये ले जाता था इनके सिवाय कपड़े और किमखाब जो बैलों पर लदे थे बहुत ज्यादा कीमत के थे।

इन सभों का तकसीम करना निहायत मुश्किल बात थी और हर एक को खुश करना भी गैर मुम्किन् था, सिवाय इसके मोतियों और हीरों के तकसीम करने से उनकी कीमत और कद्र बहुत कम होजाती। पस यह करार पाया कि नक़द रुपया, खाना पकाने के बरतन, कमकीमती कपड़े और चंद छोटी मोटी चीज़ें इस वक्त दो हिस्से में मुताबिक गरोह के हैसियत के बांट लिये जावें, जवाहिरात कुल मेरे वालिद के कब्ज़े में रहें जिन्हें वे हैदराबाद पहुंच कर जितनी ज्यादा कीमत पर होसके फरोख़ करें और वहीं पर दीगर असबाब मसलन् किमखाब वगैरह भी बेचा जाय। इन सब चीजों की आमदनी तब तक तकसीम न की जावे जब तक हम सब लोग लौट कर फिर अपने पुराने जमावड़े के मुकाम पर न पहुंचे।

नक़द रुपया साढ़े तीन हज़ार के कुछ पार था सो उसके तकसीम हो जाने से हर एक शख्स के पल्ले एक अच्छी रकम पड़ी जो उसे चंद रोज़ तक मदद पहुंचाने के लिये काफी थी, सिवाय इसके अभी पेश्तर के लूट का माल भी लोगों के पास बचा था कुल खर्च न हुआ था क्योंकि जहां तक मुमकिन होता हर एक शख्स किफायतशारी से चलता था और इस बात का शौक रखता था कि आखीर में सब से ज्यादा हिस्सा किसे मिलता है। बाज़े तो यहां तक मक्खीचूसी और कंजूसी करते थे कि मैंने उन्हें कभी भी दमड़ी का घी खाते न देखा बल्की हमेशा निरे पानीही से रोटी घोंटते पाया।

बद्रीनाथ गरोह में सब से चालाक, होशियार और दानिशमंद शख्स था और उसकी चाल चलन इन लोगों से कहीं मुख्तलिफ़ थी। वह कद में नाटा मजबूत और फुर्तीला जवान था और हमेशा जमादारी का दर्जा हासिल करने की ख्वाहिश रखता था बल्कि वह इस काबिल भी था। मैं पेश्तर बयान कर चुका हूं कि वहपाक् कुल्हाड़े को लेकर गरोह के आगे २ चलाता था। हम लोगों में वह सब से हिम्मतवर व दिलेर शख्स था और अक्सर चंद लोगों के साथ उसने कई बार चढ़ाइयां की थी और अपने मातहत की लोगों को लूट के माल से बहुत खुश कर चुका था।

साहब! उस शख्स का खाना भी एक निहायत ताअज्जुब का मामला था।

जो कुछ वह पाता सब खा पका जाता, हर रोज़ दो सेर आटे की रोटियां और पाव भर घी और एक कटोरा दूध तो उसका मामूली खुराक था। जब वह रोटियों को पका कर जमा करता और खाने के लिये बैठता तो देखने वालों को हैरत होती थी कि यह अकेला शख्स क्योंकर इस तमाम ढेर को खतम कर जायगा, मगर एक एक करके वह उन सभों को उड़ा जाता और इसकदर पानी पीता कि जिसके पीने से एक आदमी का पेट योंही भर जाता।

जब रोटियां खतम होने लगतीं तो साफ़ दिखलाई पड़ता था कि अब खाते २ उसका मुंह थक गया है, शिकम उसका फूल कर घड़े के मानिन्द हो जाता, खाते खाते एक तरफ को ऐंठता और फिर दूसरी तरफ को; मुंह का लुकमा गले में उतार जाता और बनी हुई रोटियों के खाने की कोशिश करके कामयाब होता।

अकसर मैं देखता कि जब वह रोटियों का पहाड़ लगा कर खाने बैठता तो गांव के दो तीन कुत्ते आकर उसके साम्हने इस उम्मेद से बैठ जाते कि शायद वह एकाद लुकमा उनकी तरफ भी फेंक दे; मगर यह कहां हो सकता था!!! कभी कभी बद्रीनाथ आखिरी दो तीन रोटियां उन्हें बांट देता था मगर इतनी सखावत तभी होती थी कि जब वह उन्हें किसी तरह न खा सकता; पर अकसर तो वह उन्हे भी हज़म करही जाता था। बाज़ वक्त ऐसा जान पड़ता कि वह कुत्तों की उम्मेद पूरी किया चाहता है यहां तक कि एकाद टुकड़ा हाथ में लेकर उनकी तरफ बढ़ाता मगर जब कुत्ते नज़दीक आते तो वह आहिस्ते से उस टुकड़े को भी मुंह में रख लेता और बिचारे कुत्ते अपना सा मुंह लेकर फिर अपनी जगह पर बैठ के उसकी तरफ़ मायूसी से देखने लगते।

हम लोग उसके इस अज़ीम खुराक पर अकसर दिल्लगी उड़ाया करते थे मगर वह कहता था कि अगर मैं इस कदर न खाऊं तो मुझ से हरगिज़ काम न होसके।

शाम के वक्त हम लोगों ने डेरा कूचकिया। सब दोस्त एक दूसरे से बगलगीर होकर रवना हुये; हम लोग खड़े देख रहे थे कि वे लोग दूर एक चढ़ाई

गीर होकर रवाना हुये; हम लोग खड़े देख रहे थे कि वे लोग दूर एक चढ़ाई पर होकर पार हुये और तब हम लोगों ने भी डेरा कूच किया।

वासिम का मामूली रास्ता छोड़ कर हम लोग बायें तरफ़ को चले और चूंकि वह रास्ता किसी बड़े शहर का मालूम होता था हम लोग औवल तो अपनी हिफाज़त और दोयमश नई उम्मेद पर उसी राह से चले गये। चांद की रोशनी के बायस बहुत रात तक सफर किया, रास्ते में अकसर उजाड़ जंगल मिलते थे। अगर कभी काम पड़ता तो रास्ता पूछने या हुक्के के लिये आग लेने को एकाद शख़्स् गांव में जाता बरनश कोई ज़रूरत न थी। मगर बाज़ वक्त यह भी हम लोगों को मुअस्सर न होता क्योंकि डांकू और लुटेरों का खौफ़ इस कदर गालिब था कि जहां हमारे पहुंचने की खबर कुत्तों के भूंकने से हुई फौरन् दीवार और फाटकों पर हथियार बन्द सिपाही तैनात और होशियार होजाया करते थे, गो हमारे गरोह को देख कर उन्हे शुबहा भी पैदा होता था मगर कोई हमसे यह न पूछता था कि तुम लोग कौन हो? कहां से आते हो? और कहां जाओगे?

इसी तरह चंद रोज़ तक हम लोग चले गये मगर यह न जानते थे कि जिस सड़क से हम चले जाते हैं वह कहां को जायगी; और चूंकि हमने कसदन् रास्ते को छोड़ दिया था इसलिये यह उम्मेद न पाई जाती थी कि वहां कोई शिकार हाथ लगे या कोई ऐसा मुसाफिर मिले जिसे हम लोग फंसावें। आखिरश हम लोग पेश्तरवाली सड़क के बनिसबत एक दूसरी चौड़ी सड़क पर पहुंचे और चूंकि हमारे कारे हाल का खतरा निहायत पीछे छूट गया था इस लिये हम लोगों ने उसी सड़क को इस उम्मेद से इख़्तियार किया कि इसके ज़रिये से हम लोग हैदराबाद या उसी जानिब के किसी दूसरे मशहूर शहर को पहुंच जांयगे जहां से कि फिर चलते रास्ते पर हो कर हम लोग अपने कार में मशगूल हो सकेंगे सिवाय इसके उस मौसिम के लिये काफी माल हम लोगों के हाथ लग चुका था मगर अभी दोही माह न गुज़रे थे कि बग़ैर किसी शिकार के हैदराबाद तक चलना हम लोगों को निहायत मुशकिल हो गया।

चलते २ कुछ देर के बाद बड़ी अमराइयों मे से दूर हिन्दुओं के मंदिरों के गुम्बज इधर उधर नज़र आने लगे जिनसे गुमान हुआ कि कोई भारी शहर नज़दीक आया चाहता है। मालूम हुआ कि हम लोग ऊमरखेर नामी शहर में पहुंच गये इस मुकाम पर गेहूं और नीज़ दूसरे क़िस्म के अनाज की खेती बिसयार होती थी और शहर रौनक अफ़रोज़ी पर मालुम पड़ता था।

वालिद ने कहा कि "अगर यहां कोई शिकार दस्तयाब न हो तो हम्हीं लोगों का कसूर है। शहर के दूसरी तरफ़ डेरा खड़ा करना चाहिये, तब सूदे लोग बाज़ार मे होशीयारी के साथ जा कर आज शाम तक कोई ऐसा उमदा शिकार लावें कि यहां मुकाम करने का मुआवज़ा वसूल हो।

साहबा सूदे का काम मैंने अब तक न सीखा था और मेरी तबीयत इस कार के सीखने के लिये निहायत चाहती थी। भटोटी के बनिस्बत इस फ़न के कामिल लोगों को ज्यादा फ़ख़ होता था। क्योंकि इसके लिये औवल दर्जे की रियाकारी और चालाकी दरकार है, मासिवाय इस के सूरत की तब दीली और उस के निबाहने की लियाकत, शीरींज़ुबानी और खुशअख़लाकी भी ज़रूर थी, बद्रीनाथ मे ये सब सिर्फ़ पाई जाती थीं, जैसा कि मैं बयान कर चुका हूं वह कद मे नाटा, मज़बूत और फ़ुर्तीला शख़्स था मगर साथही निहायत खूबसूरत वा दिल फ़स भी था। उसे इस बात का फ़ख़ था कि मैं जब शिकार लाता हूं तो उसे अपनेही हाथों से खतम करता हूं।

खैर हम शहर से होते हुये चले, अगर कोई पूछता तो कह देते कि हम लोग हिन्दोस्तान के सौदागर हैं खास कर जब चुंगी वाले हमे रोकते तो मेरे वालिद उन सब कपड़ों को बग़ैर उज्र दिखला देते और जो कुछ चुंगी तलब होती राज़ी खुशी दे देते इसलिये हमारे बयान पर ज्यादातर एतकाद होता, सब अफ़सर लोग हमारे साथ शराफ़ाना सुलूक करते और हमे डेरा खड़ा करने के लिये उनदी ज़मीन दिया करते थे।

बद्रीनाथ ने कहा "अब उमदा कपड़ा निकाल कर पहनो और हमारे साथ शहर में चलो। याद रक्खो कि तुम्हारे वालिद सौदागर हैं, तुम उनके जमादार हो और मैं आप के साथ का एक भला आदमी हूं—हमलोग पीर

खां को भी साथ ले लेंगे जो बावजूद लूघा के सूदा का भी काम उम्दी तौर से कर सकता है, और जब कपड़े और हथियार से लैस हो जाता है तो खासा इज्जतदार भला आदमी मालूम पड़ता है; सो अगर कोई शिकार न फँसाया तो निहायत अफसोस का मुकाम होगा"।

हमलोग झटपट खा पीकर तयार होगये और खूब उम्दे कपड़े पहिन कर शहर में किसी असामी के तलाश में निकले। मुझे यह देख कर निहायत ताअज्जुब होता था कि किस बेपरवाही और संजीदगी से पुराने उस्ताद लोग चल पड़े और क्या उनका मक़सद था; क्योंकि मुझे तो वैसाही जोश इसमें भी होता था कि जैसा उन कामों में हुवा था कि जो में पेश्तर सीखे और कर चुका था। साहब! हमलोगों की शानशौकत काबिल तारीफ़ थी, खास कर मेरी पोशाक और मेरे हथियार निहायत ज़र्क वर्क थे जिनके बायस हर खास ओ आम की निगाह मुझ पर पड़ती थी। मैं उस वक्त निहायत खूबसूरत था, मसें भीगती थीं, और बदन मेरा गोकि दुबला पतला था ताहम् आइन्दे की ताकत और मजबूती झलकती थी। मेरी शान अपने साथियों से कहीं बढ़ कर थी, मैं कुछ ऐंठता हुआ इस तौर से चला जाता था कि गोया कोई निहायत बहादुर सिपाही या अफसर हो।

हमलोग शहर में दाखिल हुए और चौरी की तरफ जहां चन्द मुअज़िज़ लोग कोतवाल के साथ बैठे थे, चले। जैसा कि अकसर थानों पर दस्तूर है चन्द सिपाही हथियार बांधे वहां हाज़िर थे। हमलोग उधर से चले जाते थे कि कोतवाल ने अपना एक सिपाही भेज कर हमें बुलाया और हमारे पहुंचने पर निहायत खातिरदारी से पेश आया। बद्रीनाथ ने मुझे एक मुअज़िज़ जगह पर बैठाया और आप कुछ दूर जाकर बैठ गया। इधर उधर की बातें होने लगीं। कोतवाल ने पूछा कि आप कौन हैं कहां तशरीफ़ लिजाते हैं? आप के वालिद का इस्मशरीफ़ क्या है वे क्या रोज़गार करते हैं और क्या २ सामान सौदागरी का लाये हैं? उसने कहा कि यह रास्ता ऐसा है कि हिन्दोस्तान के मुसाफ़िर अकसर इधर बहुत कम आते हैं। उसके सवालात पूछने के ढंग और लहजे से मुझे शक और खौफ़ हुआ कि शायद हमलोग प-

छिपाने गये; मैं कुछ जवाब बनाकर देनेही को था कि बद्रीनाथ बीच में बोल उठा।

उसने कहा "जनाब उन मनहूस नागपूरवालों ने हमें गुमराह कर दिया। खुदा जाने हमें धोखा देने की नीयत से या जैसा कि मैंने बादज़ां सुना हमें लूटने की नीयत से उन्हीं ने ऐसा किया क्योंकि जिस किसी से हम रास्ता पूछते थे वह हमें यही बतलाता था कि यही रास्ता सब से उम्दा और अच्छा चलता है। और दरहकीकत यह शहर जिस में आप लोगों को रहना खुशनसीबी है निहायत खूबसूरत और आबाद है और यह साफ ज़ाहिर है कि यहां का हाकिम निहायत अक्लमन्द और रैय्यत-परवर है। क्यों जमादार साहब मैं ठीक कहता हूं न?"।

मैंने कहा 'बेशक बजा कहते हैं। और हम लोगों के साथ जो मेहरबानगी और सुलूक होता था उस से ज़ाहिर होता है कि जैसा नेक हाकिम है वैसेही नेक और लायक उसके मातहत के अफसर लोग भी हैं। बेशक इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं है जो ऐसे लोगों के इन्तिज़ाम से यह शहर ऐसा रौनक अफ़रोज़ है, इसके अलाव: शहर कोतवाल की शीरीं ज़ुबानी इस कदर है कि जिस से हाकिमे मुल्क की शिनाख़ ऐसे लईक शख्स के मुकर्रर करने से दिल पर ज्यादा असर पैदा करती है।

कोतवाल ने कहा "यह हुजूर की इनायत है बन्दा तो इस तारीफ़ के काबिल हरगिज़ नहीं है मैं तो हकीरों से भी हकीर हूं। अगर हुजूर हमारे इनायतफर्मा को जिन के ज़ेरसाय: हम लोग रहते हैं देखेंगे तो फर्मावेंगे कि हैदराबाद का दरबार भी हिन्दोस्तान में लासानी है जहां के खूबियों का यह एक छोटा सा नमूना है"।

मैंने कहा "बेहतर है हम लोग भी आप के आका के कदमों पर नज़र गुज़रान कर ऐन खुश होंगे, और बिलाशक हम लोग उनमें शराफ़त का वह नमूना पावेंगे जो कि हम दक्खिन के दारुस्सलतनत में देखने की उम्मेद करते हैं। तो बराय मेहरबानगी यह फरमाइये कि हुजूर में किस वक्त चलना होगा"?

उसने कहा "आज शाम को मग़रब की नमाज़ के बाद चलिये, उस वक़ इन नामोश्रतकिद काश्त-कारों का इनसाफ़ किया जाता है और दरबार भी चन्द रण्डियों की हाज़िरी और रागरंग से जिन्हे हुजूर शहर से ले आये हैं।" रौनक रहता है।

मैंने कहा "बेहतरहै, मैं उस वक़ हाज़िर होऊंगा- और आप से भी इल्तिमास है कि आप हुजूर को आगाह करदें कि हम लोग उनसे मुलाकात करेंगे या यों अर्ज़ कीजिये कि हम लोग हुजूर मे नज़र गुज़ारने की ख़ाहिश रखते हैं।"

मेरे चुप होतेही एक सिनरसिदा सा भलामानस जवान चौरी में आया। वह ज़ात का हिन्दू था और देखने मे सौदागर मालूम पड़ता था। आतेही उसने बड़ी बेइहतियाती से कहा कि मुझे कोई ठहरने की जगह दीजिये और अगर अभी मुझे जगह न मिलेगी तो मैं फौरन् जा कर शहर के हाकिम के पास शिकायत करता हूं"।

उस शख़्स के गुस्ताख़ाना और नाशाइस्त बोल चाल से कोतवाल का मिज़ाज़ कुछ बरहम् हो गया; उन्हो ने उसे कहा कि जब तक आप शाइस्तगी और इन्सानियत से न मांगियेगा तब एक बालिस्त भी ज़मीन टिकने के लिये न दी जायगी।

तब हमारे तरफ मुतवज्जह होकर कहा कि" आप लोग देखते हैं, आपही इस का इन्साफ़ फर्माइये, कसम रसूल अल्लाह की मैं इस के लिये रत्ती भर परवाह नही करता। मैंने बीसीयों इससे भी बढ़कर देखे हैं अगर यह शिकायत करने जाता है तो जाये हुजूर के साम्हने से कोड़े पीट कर निकाला जायगा। इसके ऐसे सैकड़ों रोज़ आया करते हैं किसकी किसकी सुनी जाय।"

उस सौदागर ने गुस्से से जवाब दिया कि तुम और तुमारे आका दोनों वजूद शैतान जान पड़ते हो जब से मैंने रियासते-नीज़ाम मे पैर धरा है हर जगह ऐसाही सलूक पाता हूं। जैसा कानों से सुना वैसाही आंखों से देखता हूं। एक शब भी ऐसा न गुज़रा होगा कि मुझे चोरों के खौफ़ के मारे नींद आई-हो, भगवान जानता है कि अगर कुछ भी हिफ़ाज़त का सामान मेरे पास होता तो आप के इस मनहूस शहर में न रह कर मैं बाहर मैदान में पड़ रहता

बनिये यहां सब बदमाश हैं, जिस भाव कल अनाज खरीदा था उससे दूना दाम मुझसे आज लेलिया और रात को टिकने के लिये कहीं भी जगह नहीं मिलती। भागवान के वास्ते ! आपही कहिये मैं क्या करूं कहां जाऊं?"

मैं कुछ कहने को था कि बद्रीनाथ ने गुस्से से जवाब दिया जिस्से मुझे ताज्जुब हुआ· उसने कहा की अब आप और क्या चाहते हैं, मैं समझता हूं कि आप को टिकने के लिये कोई मुकाम दिया गया था मगर आपने उसे अपने लिये शायद काफ़ी न समझा- कुछ अफीम खाते हो क्या ? या सफ़र की भूख से मिज़ाज खफ़ा होगया है? जाओ बाज़ार का रास्ता लो और अगर कोई जगह मिल जाय तो शुक्रिया अदा करो; और अगर कोई भी तुम्हे पनाह न दे तो रास्ते में पड़ रहो और यह समझ रक्खो कि इस के पेश्तर तुम से बेहतर सैकड़ों शखस योंही गुज़रान कर गये हैं"।

वह शख़्स हक्का बक्का हो कर कभी हम लोगों और कभी कोतवाल और उसके सिपाहियों की तरफ देखता और उसकी इस शिकस्तदिली को देख कर कोतवाल के तमाम लोगों के दिल मे एक तरह की खुशी होती थी। एकने कहा "खूब कहा दूसरा बोला" यह इसी लायक है तीसरे ने कहा "इसे गांव के बाहर निकाल देना चाहिये" योंहीं सब के सब उस की दिल्लगी उड़ाने लगे कुछ देरतक वह चुप चाप खड़ा था आखिर उसने गुस्से से अपनी पगड़ी ज़मीन पर पटक दी और बड़े ज़ोर से चिल्लाता हुआ बाहर निकल गया।

हम सब उसकी यह हालत देख कर कहकहा मार हँसने लगे। मैंने कोतवाल से कहा कि यह "अजीब शखस है, इसमे कोई शक नहीं कि आप को अक्सर ऐसे लोग तकलीफ़ दिया करते होंगे। मगर मेरे कहने से आप उसे बुलवा भेजिये, हम लोग उसे खुद शर्मिन्दा करेंगे और अगर हो सके तो बराय मेहरबानी मेरी इलतिज़ा से उसे कोई मुकाम ठहरने को दे दीजिये।"

उसने कहा "खैर जैसा आप फर्मावें, अगर आपने दखल न दिया होता तो मे हर्गिज़ उसके लिये तकलीफ़ न उठाता। ऐसे २ पचासों रोज़ आया करते हैं, एक रोज़ एक शखस चिल्लाता हुआ आता है कि मुझे किसी ने धोखा दिया। दूसरा कहता है मुझे खाने को नहीं मिलता। तीसरा रोता है कि मुझे

टिकने की जगह नहीं मिलती पर वे सब बनिये को उसकी दूकान के लिये दो चार पैसे भी नहीं दिया चाहते। चौथा शख़स शहर की तमाम नज़ाकत और नफ़ासत चाहता है और न मिलने पर गज़ब की आंखें दिखलाता है मगर जब तमाम चीज़ें उसके पास रखदी जाती हैं तो गांठ में एक पैसा खरीदने को नहीं निकालता। मुद्दआ यह कि मुसाफ़िरों की बेवकूफ़ी और खामख्याली बल्कि ज़ुल्म के मारे मेरा नाकों में दम है, मै ख्याल करता हूं कि शायद वे समझते होंगे कि मुझमे कोई अजगैब की ताकत है या जिन्न लोग मेरे हुक्म के तावे हैं जो मैं उनके बेहूदा ख़ाहिशों को उसी दम पूरा कर सकता हूं।"

मैने कहा "दरहक़ीकत आप का मुकाम निहायत नाज़ुक व मुशकिल है और हर बशर को खुश करना भी गैर मुम्किन् है, मगर वह देखिये सौदागर आ रहा है"। इतने मे वही सौदागर फ़िर वहां हाज़िर हुआ।

कोतवाल ने कहा " मर्दे आदमी! अपनी पगड़ी तो उठाओ और ख़फ़ा न होचो! तुम लड़के नहीं हो जो इस तौर अशराफ़ों से लड़ते फिरते हो। क्या तुम ने कभी पेश्तर सफर नहीं किया है? वर्नः इस तौर के वर्ताव तुम्हारे हर्गिज़ न होते। नामे ख़ुदा पगड़ी तो उठाओ, देखो तुम लोगों मे कोई शख़्स जाकर बंदोबस्त कर दो। कि इस भले आदमी को कहीं टिकने की जगह मिल जाय"।

कुछ देर तक तो वह चुप चाप खड़ा था आखिर को अपनी पगड़ी उठा कर उस आदमी के साथ आहिस्ते २ चला जो उसके लिये जगह तजवीज़ कर ने को मुकर्रर हुआ था।

बद्रीनाथ ने मुझे इशारा किया, मैने कोतवाल से रुखसत ली। ज्योंही हम लोग बाहर निकले कि बद्रीनाथ ने कहा कि" बस यह शख़स हमारा हो चुका आओ देखो मैं क्योंकर इसका बन्दोबस्त करता हूं। मैं कह सकता हूं कि इसके साथ बहुत कम लोग होंगे और यह बाआसानी खतम कर दिया जायगा"।

हम लोग दूरही से उसे और उसके साथी को निगाह पर चढ़ाये थे और देखा कि उसके टिकने के लिये एक महज़ मनहूस टूटी फूटी सी जगह दी-

गई जिस्से वह आसूदा न जान पड़ता था। हम लोग कुछ देर तक इधर उधर टहलते रहे जब तक कि उसे अकेला पाकर उसके पास पहुंच बद्रीनाथ ने कहा—

"राम! राम! सेठजी! क्या वह मखूस आपको इस गंदी मनहूस जगह मे डेरा दे गया है जहां कुत्ते भी पिशाब न करें। वह बदमाश कोतवाल जुबान का मीठा और दिल का सख़ हरामज़ादा है और मैंने सुना है (बद्रीनाथ ने आहिस्ते से कहा) कि उसने कितनेही चोर इसी काम के लिये नोकर रक्खे हैं कि रात के वक़ मुसाफिरों के सिरहाने से गठड़ी काट लावें और जब सुबह को वह बिचारा मुसाफिर थाने पर इत्तिला करने जाता है तो मार कर गांव के बाहर निकाल दिया जाता है। कहिये जमादार साहब। आप भी तो सुनते थे न? ॥"

मैंने कहा "बेशक! आपको यादही होगा कि वह बिचारा मुसाफिर जो गांव से चन्द कोस के फासले पर हम लोगों को मिला था कहता था कि जमरखेर के चोरों से हुशियार रहियेगा क्योंकि मेरा कुल माल असबाब लुटगया और मैं गांव के बाहर निकाल दिया गया; मेरे पास एक चीथड़ा तक न बचा। इसी लिये मैंने शहर के बाहर डेरा खड़ा किया जहां खुद हमारे संतरी पहरे पर रहेंगे और अगर इतने पर भी हम लुट जांवे तो हमारा कसूर है।"

उसने कहा "भगवान मालिक है! मै तो गया!! अब मैं क्या करू? कहां जाऊं" इतना कह कर दोहत्थड़ सिर पीटने लगा। "जो कुछ मेरा है सब इन्हीं गठड़ियों में है, मैं किसी तरह जान बचाकर सूरत से भागा और यह देखता हूं कि ज्यों ज्यों आगे जाता हूं त्यों त्यों और भी भारी आफत में फसता हूं। अभी हाल की बात है दो रात जागते २ मेरी आंखें बाहर निकलने लगीं बैठना मुशकिल होगया, ज्योंही मेरी आंख झपकी कि चोर मेरे सिरहाने से गठड़ी खीचने लगे, मैं जाग उठा, देखा कि चोर रसोंई के दो बर्तन और कुछ पहिनने के कपड़े ले भागे। अब क्या करू? जो मैं उनके पीछे दौड़ता तो इधर कोई मेरी गठड़ियां उठा ले जाता सो मैं वहीं बैठा २ चिल्लाने लगा। गांव वाले झट जमा होगये और जब मैंने अपना हाल सुनाया तो एक चा-

गड़ास जो अपने तईं पटेल बतलाता था कहने लगा कि तू झूठेही मेरे गांव को बदनाम करता है, सो मैं गांव के फाटक के बाहर निकाल दिया गया कि अंधेरे में टकराता फिरुं जहां हरदम इस बात का डर था कि कोई आकर मुझे लूट न ले और उस अकेले सुनसान जगह में मुझे मार डाले। हाय! मेरे दुर्भाग्य! देखूं अब क्या होता है! मैने बड़ी भूल की जो अपना शहर छोड़ कर इन जंगली हत्यारों के बीच में आ पड़ा देखूं भगवान क्या करता है"?

बद्रीनाथ ने बड़ी रहम दिली और हमदर्दी की आवाज़ से कहा "कुछ परवाह नहीं, बेशक आप के साथ निहायत बदसलूक हुआ, है आप को चाहिये कि यहां के हाकिम के पास जाकर शिकायत करें, सुनते हैं कि वे निहायत नेक और रहमदिल हैं गो उनके मातहत के नौकर चोर और बदमाश हों"।

"हरे राम! राम" उसने कहा "जाकर शिकायत करें और पास का पैसा कौड़ी सब गवाँदें उस बड़े आदमी के यहां नज़र देना होगा और सभी छोटे बड़े कुछ न कुछ मांगेहींगे, अगर देने से इन्कार किया तो जो हालत मेरी अब है इससे भी ख़राब होगी। नहीं नहीं अभीतक तो मैं लूटा नहीं गया और जो भगवान की कृपा से मैं इस शहर से राज़ी खुशी निकल गया तो मैं चंद उन भलेमानसों का साथ करलूंगा जो उसी तरफ को जाने वाले हों"।

बद्रीनाथ मेरी तरफ फिरा और मुझे एक गोशे की तरफ दो चार कदम ले गया और कहा "देखो मछली तो बंसी में फँस गई है फ़क़त खींच लेने की देर है"।

मैने पूंछा "क्योंकर"।

उसने कहा "इसे अपने खेमें में बुलाने से, मैं इस बात की सलाह उठाता हूं पहिले तो आप इसे नापसन्द करियेगा और फिर मेरे बहुत कहने सुनने से राज़ी हो जाइयेगा; क्यों समझे न?"।

मैने कहा 'अच्छा' सो हम लोग फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुये।

बद्रीनाथ ने उससे कहा 'सेठजी! आप बेशक मुसीबतज़दा हैं और अगर मैं इस वक़्त यहां आप की मदद न करूं तो बिलाशक आप का तमाम माल भी

असबाब लुट जायगा। खैर आप आकर हमारे खेमे में डेरा कीजिये बशर्तें कि जमादार साहब इस बात की इजाज़त देवें; मगर सच तो यों है कि हम लोग बहुत खबरदार रहते हैं और किसी गैर शख्स को अपने पास हर्गिज़ नहीं आने देते क्योंकि हम लोग एक सौदागर के हिफाज़त में नौकर हैं जो बहुत कुछ माल वो असबाब अपने हमराह लेकर बनारस से हैदराबाद को तशरीफ़ ले जाते हैं"।

उसने निहायत आजिज़ी से कहा "भगवान के वास्ते; अपने मा बाप के वास्ते! अपने बाल बच्चों के वास्ते! जमादार साहब! मिहर्बानी करके मुझ पर रहम कीजिये नहीं तो मैं गरीब यहां लुट जाऊंगा" फिर मेरा दामन पकड़ कर कहने लगा "आप मेरे मा बाप हैं आपके फक़त ज़बान हिलाने से मेरी जान बच जायगी और मेरा सब सौदागरी का असबाब अपने ठिकाने से पहुंच जायगा। भगवान जानता है जो मुझे कुछ भी रास्ते में होगया तो मेरा घर बार सब तबाह हो जायगा, मेरे मालिक मेरी कबीला और बच्चों को लूट लेंगे। जमादार साहब! आप मुझे इन आफतों से बचा सकते हैं जिन्हें याद करके मेरे प्राण उड़े जाते हैं"।

"थू! भले आदमी" मैंने ज़मीन पर थूक कर कहा "इतने हकीर मत बनों इनशाअल्ला मैं खुदा के फज़ल से उस शख्स की हिफाजत करता हूं जो इस वक्त सौदागरों में बादशाह है तुम तो उसके मुकाबिल महज़ नाचीज़ हो खैर अल्लाह के नाम पर हमारे साथ चले आओ और हम तुम्हारी हिफाज़त करेंगे हम लोग भी हैदराबाद को जा रहे हैं सो तुम हमारे आदमियों के साथ अपना डेरा रखना, देखो पीरखां तुम इस भले आदमी को अपने साथ ले आओ"।

पीरखां तो वहीं रह गया और हम अपने खेमे में पहुंचे। रास्ते में हम लोगों ने सलाह कर लिया कि आज चिराग लगने के पेश्तर ही इसका काम तमाम करना चाहिये ताकि हम लोग इसके बाद शहर में जाकर हाकिम का दरबार बखूबी कर सकें।

थोड़े अर्से के बाद देखा कि पीरखां और वह सौदागर मय एक दूसरे